पर्यवेक्षक टिप्पणी

पाठ योजना क्रमांक .... 01 .... दिनांक 18-[illegible]-19

नाम छात्राध्यापक ...... Tina Sharma ...... अनुक्रमांक 1819[illegible]

विद्यालय पारख पब्लिक स्कूल [illegible] ... [illegible]

विषय ...... अर्थशास्त्र ...... प्रकरण आवश्यकताओं

का वर्गीकरण

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - ठीक
7. प्रायोगिक कार्य - पर्याप्त
8. कक्षा में विद्यार्थियों की भागीदारी - अच्छी
9. अभ्यास कार्य/गृह कार्य - दिया गया पर्याप्त
10. विविध - —

Principal
Parakh Public H. S. S.

अध्यापक के हस्ताक्षर

Tina Sharma
छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक टिप्पणी

पाठ योजना क्रमांक 02 दिनांक 22-07-19

नाम छात्राध्यापक TINA SHARMA अनुक्रमांक 18199825

विद्यालय परख पब्लिक स्कूल, सांवेर कक्षा 10वी वर्ग अ

विषय अर्थशास्त्र प्रकरण मुद्रा

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - ठीक
7. प्रायोगिक कार्य - प्रभावित
8. कक्षा में विद्यार्थियों की भागीदारी - ठीक
9. अभ्यास कार्य/गृह कार्य - दिया गया उचित है।
10. विविध - —

अध्यापक के हस्ताक्षर

Principal
Parakh Public H. S. S.
Sanwer, INDORE (M. P.)

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक टिप्पणी

पाठ योजना क्रमांक .... 03 .... दिनांक 23-07-19

नाम छात्राध्यापक .... TINA SHARMA .... अनुक्रमांक 18197825

विद्यालय पारख पब्लिक स्कूल सांवेर कक्षा 11 वीं वर्ग अ

विषय अर्थशास्त्र प्रकरण गरीबी

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - ठीक
7. प्रायोगिक कार्य - पर्याप्त
8. कक्षा में विद्यार्थियों की भागीदारी - ठीक
9. अभ्यास कार्य/गृह कार्य - दिया जाना पूर्ण है।
10. विविध - —

अध्यापक के हस्ताक्षर

Principal
Parakh Public H. S. S.
Sawer, INDORE (M.P.)

प्राध्यापक के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक टिप्पणी

पाठ योजना क्रमांक .... 04 .... दिनांक 24-09-19

नाम छात्राध्यापक .... TINA SHARMA .... अनुक्रमांक 18193825

विद्यालय पारख पब्लिक स्कूल, सांवेर कक्षा 11 वीं वर्ग [illegible]

विषय .... अर्थशास्त्र .... प्रकरण बेरोजगारी

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - पर्याप्त
7. प्रायोगिक कार्य - ठीक
8. कक्षा में विद्यार्थियों की भागीदारी - ठीक
9. अभ्यास कार्य/गृह कार्य - दिया गया उचित
10. विविध - —

अध्यापक के हस्ताक्षर

Principal
Parakh Public H. S. S.
Sanwer, INDORE (M. P.)

Tina Sharma
छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

पाठयोजना - 01

आवश्यकताओं का वर्गीकरण

विद्यालय का नाम : भरत पब्लिक हायर सेकेण्डरी स्कूल
विषय : अर्थशास्त्र दिनांक : 18-09-19
कक्षा : 9 वीं कालांश : II
प्रकरण : आवश्यकताओं का वर्गीकरण कालखण्ड : 40 min

सामान्य उद्देश्य :

(i) छात्रों के आर्थिक तत्व व तथ्यों का ज्ञान करना।
(ii) छात्रों को उन आर्थिक साधनों का ज्ञान कराना जिनसे वह अपने लिए व्यवसाय का चुनाव कर सके।
(iii) छात्रों में कुशल उपभोक्ता की भावना को विकसित करना
(iv) छात्रों में बचत के व्यावहारिक महत्व को समझाना।
(v) छात्रों को सफल प्रजातांत्रिक नागरिक बनाना

विशिष्ट उद्देश्य :

(1) ज्ञानात्मक पक्ष : छात्र आवश्यकताओं को परिभाषित कर सके।
(2) भावात्मक पक्ष : छात्र आवश्यकताओं का वर्गीकरण का उसका चयन कर सके।
(3) मनोगत्यात्मक पक्ष : छात्र आवश्यकताओं के वर्गीकरण को किसी भी दी हुई परिस्थिति में प्रयोग कर सकेंगे

शिक्षण विधि : आगमन विधि

सहायक सामग्री : पाठ्य पुस्तक, चॉक, डस्टर, चार्ट, श्याम पट्ट

पूर्वज्ञान : छात्र आवश्यकताओं की सामान्य जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना :

क्र.	छात्राध्यापिका व्यवहार	छात्र व्यवहार
1.	किसी वस्तु को पाने के लिए मन में जो भाव पैदा होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?	उसे इच्छा कहते हैं।
2.	इच्छा जब अत्यन्त प्रभावपूर्ण हो जाती है, तो वह क्या बन जाती है?	आवश्यकता।
3.	आवश्यता की पूर्ति हम किस प्रकार करते हैं?	धन के द्वारा।
4.	आवश्यकताओं का वर्गीकरण किस आधार पर किया जाता है?	निरुत्तर (समस्यात्मक प्रश्न)

उद्देश्य कथन : आज हम मानवीय आवश्यकताओं का वर्गीकरण करेंगे।

प्रस्तुतिकरण :

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका व्यवहार	छात्र व्यवहार	श्यामपट्ट का
1.	भूख मिटाने के लिए व्यक्ति को किसकी आवश्यकता होती है?	रोटी की	
2.	क्या इन्हें आवश्यकता की श्रेणी में रखा जा सकता है?	हाँ	

	चार्ट दिखाते हुए :	छात्र सभी पूर्वक देख रहे हैं।	
	प्रस्तुत चार्ट में आवश्यकताओं को तीन प्रकार में वर्गीकृत किया गया है।		
स्पष्टीकरण	मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित हैं और प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता की तीव्रता समान नहीं होती। इसी के आधार पर आवश्यकताओं को अनिवार्य, आरामदायक और विलासिता में वर्गीकृत किया जा सकता है।	छात्र ध्यान पूर्वक देख व सुन रहे हैं।	
अनिवार्य आवश्यकता	इनकी पूर्ति करना प्रत्येक दशा में आवश्यक है। एक मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन एवं पहनने के लिए कपड़े की जरूरत रहती है।		अनिवार्य आवश्यकता का अर्थ।

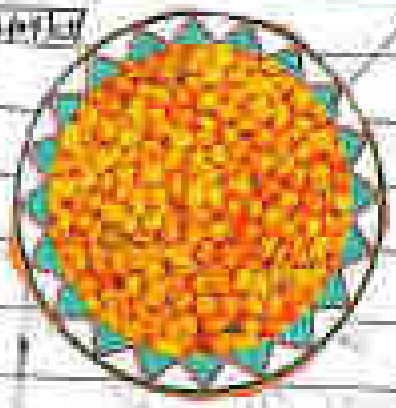

	बिना इनकी पूर्ति के मानव जीवित नहीं रह सकता।		
बोध प्रश्न प्रश्न 1	कोई बता सकता है, इन आवश्यकताओं के उदाहरण क्या हैं, इन्हें जीवन रक्षक आवश्यकता भी कहते हैं।	रोटी, कपड़ा, भोजन, मकान	भोजन, वस्त्र।
उदाहरण	 भोजन आवास 		
प्रतिष्ठा-रक्षक आवश्यकताएँ	इसी प्रकार यदि आप इन सुविधाओं का उपयोग अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए करते हैं।	छात्र ध्यान-पूर्वक समझ रहे हैं।	प्रतिष्ठात्मक आवश्यकताएँ।
उदाहरण:	घर आए मेहमान के लिए जलपान, भोजन की व्यवस्था करते हैं, तो इसे प्रतिष्ठारक्षक आवश्यकता कहते हैं।		

प्रश्न 2.	अतिथियों का सत्कार क्यों किया जाता है?	सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए	
उदाहरण	गर्मी में कूलर की आवश्यकता पर ठंड में नहीं, आपने सोचा है क्यों?	छात्र विचार कर रहे हैं।	
	आरामदायक वस्तुएँ		
आरामदायक आवश्यकताएँ	कुछ दया रुककर — क्योंकि ये वस्तुएँ हमारे आराम के लिए हैं। हमारी सुविधा के अनुसार ये वस्तुएँ बदलती रहती हैं। इनकी पूर्ति से मनुष्य सुख या मनोरंजन का अनुभव करता है। वह आरामदायक आवश्यकता कहलाती है।		आरामदायक आवश्यकता
बोध प्रश्न			
प्रश्न 1.	आराम दायक आवश्यकता के दो उदाहरण दीजिए।	गर्मी में कूलर मनोरंजन के लिए टी.वी.।	

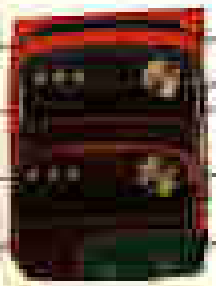

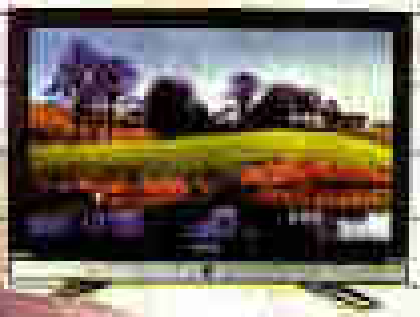

प्रश्न 14	किन वस्तुओं से मनुष्य सुख व आराम का अनुभव करता है?	आरामदायक वस्तुओं से।	
उदाहरण :	जैसे साइकिल के स्थान पर मोटरसाइकिल। ऐसी वस्तुएँ मात्र शौक, दिखावे मनोरंजन के लिए प्रयोग होती हैं। ऐसी आवश्यकताएँ विलासिता पूर्ण आवश्यकता कहलाती हैं।		
विलासिता -पूर्ण आवश्यकताएँ	वर्तमान में मनुष्य के पास कई विकल्प मौजूद हैं विलासिता पूर्ण आवश्यकता के लिए।		विलासिता पूर्ण आवश्यकताएँ।

बोध प्रश्न		
प्रश्न 1	बच्चे का महंगा खिलौना किस प्रकार की आवश्यकता है?	विलासिता-पूर्ण।
प्रश्न 2	विलासिता पूर्ण आवश्यकता से कैसे सुख की प्राप्ति होती है।	अतिरिक्त कार्य सुख की प्राप्ति।

पुनरावृत्ति प्रश्न

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक व्यवहार	छात्र व्यवहार	श्या. कार्य
प्र. 1.	आवश्यकता से क्या आशय है?	जीवित रहने की जरूरी साधन।	
प्र. 2	आवश्यकताओं को कितने भागों में बाँटा जा सकता है?	तीन।	
प्र. 3	आरामदायक वस्तुओं का उपयोग क्यों किया जाता है?	सुख के लिए	
प्र. 4.	विलासिता पूर्ण आवश्यकताएँ क्या है?	प्रतिष्ठा के लिए जैसे: कार, ए.सी.	

कक्षा कार्य :

(1) रोटी कपड़ा मकान किस आवश्यकता का उदाहरण है?

(2) आवश्यकताएँ कैसी होती है?

गृह कार्य :

(1) प्रत्येक आवश्यकताओं के दो-दो उदाहरण लिखिए।

(2) अपनी पुस्तिका में चित्रों को दर्शाओ।

श्यामपट्ट कार्य

प्रकरण : आवश्यकताओं का वर्गीकरण

शिक्षण बिंदु

आवश्यकताओं का वर्गीकरण

- अनिवार्य आवश्यकताएँ
  - जीवन रक्षक आवश्यकताएँ
  - कार्यक्षमता रक्षक आवश्यकताएँ
  - प्रतिष्ठा रक्षक आवश्यकताएँ
- आरामदायक आवश्यकताएँ
- विलासितापूर्ण आवश्यकताएँ
  - हानिकारक विलासिताएँ
  - हानि-रहित विलासिताएँ

TELEPHONE
दूरभाष (टेलीफोन)

विषय शिक्षक के हस्ताक्षर | पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर | छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

पाठ योजना – 02
मुद्रा

विद्यालय का नाम : परख पब्लिक हायर सेकेण्डरी स्कूल
कक्षा : 10 वीं — दिनांक : 22-9-2015
विषय : अर्थशास्त्र — कालखण्ड : III
प्रकरण : मुद्रा — समय : 40 min

सामान्य उद्देश्य :
(i) छात्रों को आर्थिक तथ्यों का ज्ञान कराना।
(ii) आर्थिक जीवन की राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्याओं से अवगत कराना।
(iii) छात्रों को पारिवारिक बजट का ज्ञान कराना।
(iv) छात्रों को सफल प्रजातांत्रिक नागरिक बनाना।
(v) भारतीय मुद्रा का ज्ञान कराना।
(vi) छात्रों को राष्ट्रीय आय को अधिकतम करने की क्षमता का विकास कराना।

विशिष्ट उद्देश्य
(अ) ज्ञानात्मक उद्देश्य : (i) छात्र मुद्रा को परिभाषित कर सकेंगे।
(ii) छात्र मुद्रा का प्रत्यास्मरण एवं प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगे।
(ब) भावात्मक उद्देश्य : छात्र मुद्रा के विभिन्न रूपों की पहचान कर सकेंगे।
(स) मनोगत्यात्मक पक्ष : छात्र विभिन्न मुद्राओं को पहचान कर उसे चित्रित कर सकेंगे।

शिक्षण विधि : आगमन व निगमन विधि

सहायक सामग्री : पाठ्यपुस्तक, चार्ट, चॉक, डस्टर, श्यामपट्ट।

→ **पूर्वज्ञान :** छात्र मुद्रा सम्बन्धी सामान्य जानकारी रखते हैं।

→ **प्रस्तावना**

क्र.	छात्राध्यापिका व्यवहार	छात्र व्यवहार
1)	हम अपनी आवश्यकता की पूर्ति का सामान कहाँ से खरीदते हैं ?	बाजार से।
2)	किसी वस्तु को खरीदने के लिए हम दुकानदार को क्या देते हैं ?	रुपये, पैसे (धन)
3)	इसे हम कैसे पहचानेंगे ?	उस पर अंकित मूल्य
4)	अर्थशास्त्र की भाषा में इसे क्या कहते हैं ?	निरुत्तर

→ **उद्देश्य कथन :** आज हम मुद्रा के अर्थ व इससे सम्बन्धित जानकारी के बारे में अध्ययन करेंगे।

→ **प्रस्तुतिकरण :**

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका व्यवहार	छात्र व्यवहार	श्यामपट्ट कार्य
	श्यामपट्ट पर चित्र बनाकर मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं - रोटी, कपड़ा, मकान	छात्र चित्र देखते हैं।	
प्रश्न।	क्या मनुष्य स्वयं अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर पाएगा ?	नहीं	

प्रश्न 2.	तो वह आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे करेगा?	दूसरों की मदद से।	
उत्तर	जिन आवश्यकताओं की पूर्ति अलग-अलग व्यक्तियों के द्वारा की जायेगी तो क्या उसके बदले में हम उन लोगों को कुछ देंगे। मानो कि हमारी कपड़े की दुकान है और हमें दूध की जरूरत है। (कुछ देर बाद – हाँ इसके बारे में हम विस्तृत अध्ययन करेंगे)	छात्र सोच रहे हैं।	
स्पष्टीकरण	प्राचीन युग में मनुष्य वस्तुओं का दूसरी वस्तुओं से बदल कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था, इसे विनिमय कहते हैं। समय के साथ वस्तु विनिमय प्रणाली में कठिनाईयाँ आने लगी, मनुष्य ने इसका दूसरा रास्ता खोजा जिससे की सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके परिणामस्वरूप मुद्रा का उदय हुआ।	छात्र ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं।	वस्तु विनिमय प्रणाली एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु
मुद्रा का अर्थ	'मुद्रा' को अंग्रेजी में 'Money' कहते हैं यह लेटिन भाषा के Moneta शब्द से बना है। सिक्का दिखाते हुए: **CURRENTLY CIRCULATED COINS**	छात्र सिक्के देखकर प्रश्नोत्तर विधि से समझ रहे हैं।	मुद्रा का अर्थ।

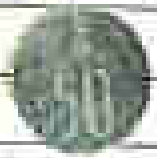

प्राचीन रूप	प्राचीन समय में मुद्रा सोने, चाँदी, ताँबा की हुआ करती थी। कठिनाई आने पर मुद्रा को सरकारी चिन्ह किया जाने लगा इसे प्रमाणीकरण कहते हैं।	छात्र प्रमाणीकरण समझ रहे हैं।	प्राचीन रूप
नवीन रूप	वर्तमान में कागजी मुद्रा उपयोग की जाती है। भारत में नोट पर गाँधीजी का चित्र अंकित है। वैध होने का प्रमाण गवर्नर के हस्ताक्षर का होना है। इसी प्रकार हर देश की अपनी अलग मुद्रा है।	छात्र कागजी मुद्रा को देख कर समझ रहे हैं।	नवीन रूप
	MONEY (CURRENCY NOTES) 		
	चार्ट दिखाते हुए : देशों की मुद्रा व नाम।	छात्र लिख रहे हैं।	

बोध प्रश्न 1.	प्राचीन युग में मुद्रा की जगह क्या प्रचलन में था ?	वस्तु विनिमय	
प्रश्न 2.	नेपाल की मुद्रा क्या है ?	रुपैयाँ	
परिभाषा	प्रो. माइकल के अनुसार : "मुद्रा में वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं, जो किसी समय अथवा स्थान पर बिना किसी संदेह अथवा जाँच के वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय करने तथा व्यय का भुगतान करने के रूप में स्वीकार की जाती है।	छात्र परिभाषा उत्तरपुस्तिका में लिख रहे हैं।	परिभाषा
स्पष्टीकरण	परिभाषा के आधार पर हम कह सकते हैं कि मुद्रा - विनिमय का माध्यम व आवश्यक तत्व है। इसका हम स्वतंत्रता पूर्वक लेन-देन कर सकते हैं।	छात्र सुन रहे हैं।	
बोध प्रश्न 1	मुद्रा किसके बदले में दी जाती है ?	वस्तुओं व सेवाओं के बदले में।	
प्रश्न 2.	मुद्रा का स्वतंत्रता पूर्वक हस्तांतरण क्यों किया जाता है?	क्योंकि वह प्रमाणित होती है।	

→ पुनरावृत्ति प्रश्न :

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक व्यवहार	छात्र व्यवहार	श्या. कार्य
(1)	मुद्रा किसे कहते हैं ?	जिसका हम उपयोग वस्तुओं और सेवाओं के बदले में करते हैं।	
(2)	कागजी मुद्रा पर किसका चिन्ह है ?	गाँधी जी	

कक्षा कार्य : (1) मुद्रा को अंग्रेजी भाषा में क्या क
(2) मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता कौन

गृह कार्य : अपनी पुस्तिका में मुद्रा के चित्र चिपका

श्यामपट्ट कार्य

प्रकरण : मुद्रा

शिक्षण बिन्दु :

1) मूलभूत आवश्यकताएँ : रोटी, कपड़ा, मकान।

2) वस्तु विनिमय : एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना।

3) परिभाषा : मुद्रा में वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं जो किसी समय, स्थान पर बिना संदेह व जाँच के वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय करने के रूप में स्वीकार की जाती हैं।

प्रो. मार्शल

विषय शिक्षक हस्ताक्षर | पर्यवेक्षक हस्ताक्षर | प्रधानाध्यापक हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक टिप्पणी

पाठ योजना क्रमांक ......01...... दिनांक 12-07-19

छात्राध्यापक का नाम ......TINA SHARMA...... अनुक्रमांक 1819382

विद्यालय ......पारख पब्लिक स्कूल सोमेसर...... कक्षा 7th वर्ग A

विषय ......अर्थशास्त्र...... प्रकरण उपभोक्ता संरक्षण

......का परिचय......

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - ठीक
7. प्रायोगिक कार्य - [illegible]
8. कक्षा में विद्यार्थियों की सहभागिता - अच्छी
9. अभ्यास कार्य / गृह कार्य - दिया गया [illegible]
10. विशेष

अध्यापक के हस्ताक्षर

Principal
Parakh Public H. S. S.
Somesar, [illegible] (P.)

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक टिप्पणी

दिनांक 22-07-19

पाठ योजना क्रमांक 02

अनुक्रमांक 18193825

नाम छात्राध्यापक TINA SHARMA

विद्यालय परख पब्लिक स्कूल, सांवेर कक्षा 10 वीं वर्ग अ

विषय अर्थशास्त्र प्रकरण मुद्रा

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - ठीक
7. श्यामपट्ट कार्य - पर्याप्त
8. कक्षा में विद्यार्थियों की भागीदारी - ठीक
9. अभ्यास कार्य/गृह कार्य - दिया गया उचित है।
10. विविध - —

अध्यापक के हस्ताक्षर

Principal
Parakh Public H. S. S.
Sanwer, INDORE (M. P.)

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक टिप्पणी

पाठ योजना क्रमांक .... 03 .... दिनांक 23-03-19

नाम छात्राध्यापक .... TINA SHARMA .... अनुक्रमांक 18197815

विद्यालय परख पब्लिक स्कूल सांवेर कक्षा ..... 11 वीं ..... वर्ग ..... अ .....

विषय .... अर्थशास्त्र .... प्रकरण गरीबी

---

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - ठीक
7. प्रायोगिक कार्य - पर्याप्त
8. कक्षा व विद्यार्थियों की भागीदारी - ठीक
9. अभ्यास कार्य/गृह कार्य - दिया गया है।
10. विविध —

अध्यापक के हस्ताक्षर

Principal
Parakh Public H.S.S.
Sanwer, INDORE (M.P.)

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक टिप्पणी

पाठ योजना क्रमांक ..... 04 ..... दिनांक 24-09-19

नाम छात्राध्यापक ..... TINA SHARMA ..... अनुक्रमांक 18193825

विद्यालय पारख पब्लिक स्कूल, सांवेर कक्षा 11 A ..... वर्ग [illegible]

प्रकरण बेरोजगारी

विषय ..... अर्थशास्त्र

1. प्रस्तावना की स्थिति - अच्छी
2. पूर्वज्ञान से संयोजन - ठीक
3. विषय वस्तु विश्लेषण - उत्तम
4. उद्देश्य व अपेक्षित परिवर्तन - ठीक
5. छात्र अध्यापक क्रियाएँ - उचित
6. सहायक सामग्री का उपयोग - पर्याप्त
7. प्रायोगिक कार्य - ठीक
8. कक्षा में विद्यार्थियों की भागीदारी - ठीक
9. अभ्यास कार्य/गृह कार्य - दिया गया उचित
10. विविध - —

अध्यापक के हस्ताक्षर

Principal
Parakh Public H. S. S.
Sanwer, INDORE (M. P.)

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर

सूक्ष्म शिक्षण पाठ्योजना क्रमांक 11

कौशल का नाम : दृष्टांत कौशल

कक्षा 6 वी ...... दिनांक 05/05/18

विषय सामाजिक विज्ञान ...... कालांश 1

प्रकरण पारस्परिक निर्भरता ...... समय 5 से 7 मिनट

उद्देश्य ...... कौशल का अभ्यास करना।

कौशल के घटक :

1. दृष्टांत सरल होना चाहिए।
2. आकर्षक / सुसंगत होना।
3. रुचिकर / उचित माध्यम का प्रयोग।
4. छात्रों की भागीदारी।
5. आगमन निगमन विधि का प्रयोग।

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक व्यवहार	छात्र व्यवहार	घटक जिसका उपयोग किया
	किसी भी व्यक्ति के लिए स्वयं सब कुछ जुटाना (इकट्ठा करना) कठीन है जैसे - खाने पीने की वस्तुए, कपड़े इत्यादि अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए किसी न किसी पर निर्भर रहना पड़ता है।		दृष्टांत सरल होना चाहिए
	बच्चों आपके घर परिवार के लिए खाना कौन बनाता है	मम्मी	रुचिकर
	... खाने के लिए		

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक व्यवहार	छात्र व्यवहार	प्रयुक्त शिक्षण उपागम विधि
	अनाज और सब्जी सामान कहाँ से आता है।	बाजार से	रोचकता रुचिकर
	और बाजार में यह सामान कौन लाता है।	व्यापारी	छात्रों की भागीदारी
	व्यापारी अनाज कहाँ से लाता है	किसानों से गाँवों से	प्रश्नोत्तर
	और किसान कपड़े व अन्य अनाज कहाँ से प्राप्त करते हैं।	शहरों की दुकानों से	
	इस प्रकार किसी कार्य या आवश्यकता के लिए एक का दूसरे पर निर्भर होना पारस्परिक निर्भरता है।		व्याख्यान विधि द्वारा
	जैसे :- गाँव व शहर के मध्य निर्भरता - अनाज, सब्जियाँ, फल, दूध इत्यादि के लिए शहर के लोग गाँवों पर निर्भर है। और		

[illegible]	प्राथमिक व्यवसाय	द्वितीय व्यवसाय	घटक जिनका उपयोग किया

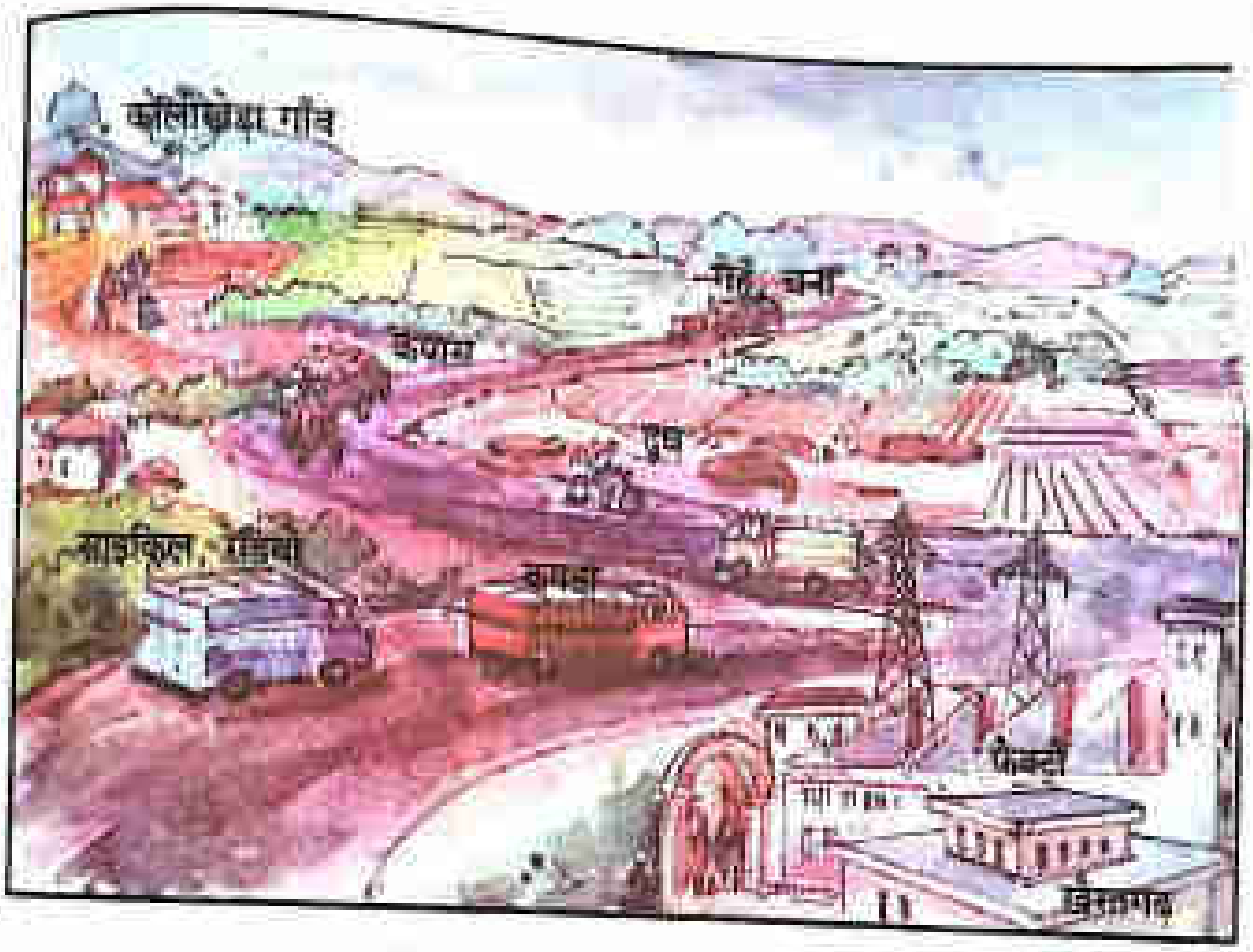

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक व्यवहार	छात्र व्यवहार	घटक जिसका उपयोग किया
	खाद, बीज, दवाई पर निर्भर रहते हैं दैनिक उपयोगी वस्तुओं, कपड़े आदि के लिए गाँव के लोग शहर पर निर्भर हैं।		प्रारंभिक
	देशों के मध्य निर्यात पेट्रोल, डीजल, मिट्टी तेल, आधुनिक उपकरण हथियार, मशीनों आदि दूसरे देशों से मंगाए जाते हैं। चाय, मसाले, अनाज, सीमेंट, तैयार कपड़े आदि दूसरे देशों को भेजे जाते हैं।		मानचित्र

स्व – मूल्यांकन

क्रमांक	घटक	टैली	कुल
1.	दृष्टांत सरल होना चाहिए	I	1
2.	प्रासंगिक	II	2
3.	रुचिकर	III	3
4.	छात्रों की भागीदारी	I	1
5.	आगमन विधि का प्रयोग	I	1

शिक्षक – मूल्यांकन

क्रमांक	घटक	टैली	कुल
1.	दृष्टांत सरल होना चाहिए		
2.	प्रासंगिक		
3.	रुचिकर		
4.	छात्रों की भागीदारी		
5.	आगमन विधि का प्रयोग		

सूक्ष्म शिक्षण पाठयोजना क्रमांक 15

छात्राध्यापक का नाम ...... आस्था चौहान

कक्षा ...... 7वीं ...... दिनांक 03/05/19

विषय ...... सामाजिक विज्ञान ...... कौशल II

प्रकरण ...... वर्षा ऋतु एवं वर्षा मापक यंत्र ...... समय 5 से 7 मिनिट

उद्देश्य ...... कौशल का अभ्यास करना।

कौशल के घटक :
1. स्पष्ट प्रारंभिक कथन। 6. तकनीकी शब्दों का प्रयोग।
2. जोड़ने वाली कड़ियों का प्रयोग। 7. समापन कथन।
3. मुख्य बिन्दुओं का समावेश।
4. बोधात्मक प्रश्न।
5. दृष्टांतों का प्रयोग करना।

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक व्यवहार	छात्र व्यवहार	घटक जिसका उपयोग किया
	बच्चों ऋतुएं कौन-कौन सी होती हैं?	शरद ऋतु, वर्षा ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, हेमन्त ऋतु, शीत ऋतु	
	मुख्य ऋतुएं कौन सी हैं।	ग्रीष्म ऋतु, शीत ऋतु, वर्षा ऋतु	
	किस ऋतु में पृथ्वी हरी रंग की हो जाती है?	वर्षा ऋतु	
	बच्चों आज हम वर्षा ऋतु के बारे में पढ़ेंगे		स्पष्ट प्रारंभिक कथन
	वायुमण्डलीय प्रतिवायु का लगातार संघनन होने		

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक व्यवहार		
	होने पर कणो के आकार में वृद्धि होती है और ये कण और भारी हो जाते हैं इस कारण धरातल पर गिरने लगते हैं तो उसे वर्षा कहते हैं।		जोड़ने की कड़ियां
	संघनन :- जलवाष्प के पुनः जल या ठोस रूप में बदलने की प्रक्रिया को संघनन कहते हैं।		तकनीकि ज्ञान का प्रयोग
	जलवाष्प :- जल के बहुत छोटे कण जब गैस का रूप धारण कर वायुमण्डल में फैलते हैं तो उन गैसीय कणों को ही जलवाष्प कहते हैं।		
	छात्रों बताओ वर्षा किसे कहते हैं।	वायुमण्डलीय जलवाष्प का लगातार संघनन होने पर कणो के आकार में वृद्धि होती है और ये कण और भारी हो जाते हैं इस कारण पृथ्वी के धरातल पर गिरने लगते हैं तो उसे वर्षा कहते हैं।	बोधात्मक प्रश्न

वर्षामापी यंत्र

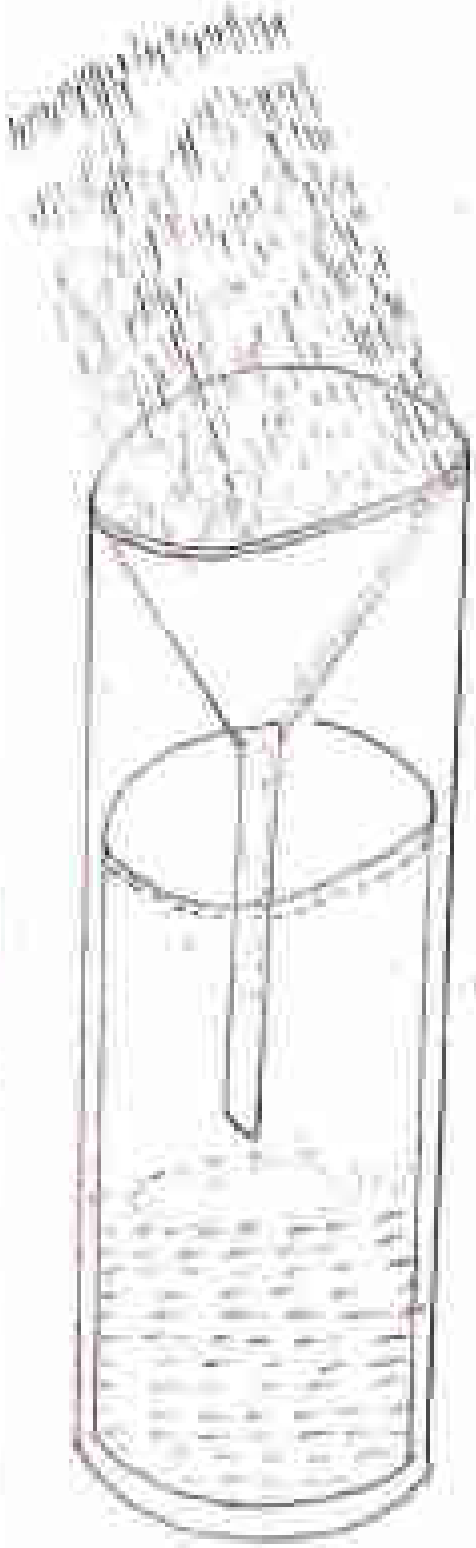

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापक व्यवहार	छात्र व्यवहार	घटक निशाना उपयोग किया
	ठो या समाचार वालों को कैसे पता चलता है कि कितनी वर्षा हुई है	छात्र मौन है।	
	वर्षा मापक यंत्र द्वारा		
	जलवाष्प को पुनः द्रव या ठोस में बदलने को क्या कहते हैं	संघनन	बोधात्मक प्रश्न
	जल को वाष्प में बदलने की क्रिया को क्या कहते हैं	वाष्पीकरण	बोधात्मक प्रश्न
	बच्चों आज हमने वर्षा और वर्षा मापी यंत्र के बारे में जाना।		समापन कथन

स्व – मूल्यांकन

क्रमांक	घटक	टेली	कुल
1.	स्पष्ट प्रारंभिक कथन ।	I	1
2.	जोड़ने वाली कड़ियों का प्रयोग ।	II	2
3.	बोधात्मक प्रश्न ।	III	3
4.	तकनिकी शब्दों का प्रयोग ।	II	1
5.	समापि कथन ।	I	1

शिक्षक – मूल्यांकन

क्रमांक	घटक	टेली	कुल
1.	स्पष्ट प्रारंभिक कथन ।		
2.	जोड़ने वाली कड़ियों का प्रयोग ।		
3.	बोधात्मक प्रश्न ।		
4.	तकनिकी शब्दों का प्रयोग ।		
5.	समापि कथन ।		

A·L·M 1

विद्यालय का नाम : परख पब्लिक स्कूल, सांवेर
कक्षा : 9 वीं दिनांक :
विषय : अर्थशास्त्र कालांश : III
प्रकरण : उपभोक्ता अधिकार समय : 30 min
शिक्षण विधि : स्व - अध्ययन विधि

[*] परिचय :

यह अध्याय हमारे देश में बाज़ार की कार्यप्रणाली के बारे में उपभोक्ता अधिकारों के मुद्दे पर विचार करता है। बाज़ार में नियमों और कानूनों को लागू तो कर दिया जाता, परन्तु पालन कोई नहीं करता। इसलिए नए उपभोक्ताओं को असलियत बताने के लिए उपभोक्ता आंदोलन में भाग लेने हेतु उन्हें प्रोत्साहित करने कि आवश्यकता है। नये उपभोक्ताओं को उपभोक्ता के रूप में सावधान और नियमों व अधिकारों से परिचित कराना आवश्यक है। इस अध्याय के माध्यम से हम जानेंगे कि कैसे वास्तविक जीवन में उपभोक्ता शोषण का शिकार होते हैं। और कैसे वैध संस्थानों ने उनके उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा कि है। उन्हें अपने नुकसान की भरपाई में मदद कि है। आज हमें जरूरत है कि हम अपने उपभोक्ता अधिकारो के प्रति जागरूक रहें,

जब कोई उपभोक्ता किसी उत्पाद का इस्तेमाल करता है तो वह भी बाजार में भागीदार बन जाता है। उपभोक्ता के बगैर बाजार का कोई अस्तित्व नहीं है लेकिन फिर भी उपभोक्ता के अधिकारों का हनन किया जाता है। आपका सामना अक्सर ऐसे दुकानदारों से होता होगा जो वजन करते समय बेईमानी करते हैं या सामान बेचते हैं। खरीदी गई वस्तु की शिकायत करने पर, विक्रेता सारा उत्तरदायित्व क्रेता पर डाल देता है।

उपभोक्ता आंदोलन की शुरुआत भारत में 1960 के दशक में शुरू हुई थी। 1970 के दशक तक इस तरह के आंदोलन केवल अखबारों में लेख लिखने और प्रदर्शनी लगाते थे। लेकिन वर्तमान में इन आंदोलनों में गति आ गई है।

एक लंबे संघर्ष और समय के बाद सरकार ने भी उपभोक्ताओं को न्याय दिलवाने के लिए 1986 में कन्ज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट (कोपरा) को लागू किया।

उपभोक्ता के अधिकार निम्नलिखित है (1) सूचना पाने का अधिकार (2) चयन का अधिकार (3) क्षतिपूर्ति निवारण का अधिकार

अधिकार का शोषण होने पर उपभोक्ता, अपने उपभोक्ता केन्द्र पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकता

है।

[*] मौन वाचन :

कक्षा के समस्त छात्रों को समूह में वर्गीकृत करके पेज संख्या 55 से 60 तक मौनवाचन करने को कहा गया तथा कठिन शब्दों और इन के अर्थों को अपनी पुस्तिका मे लिखा गया।

[*] कठिन शब्द : अर्थ :

कठिन शब्द	अर्थ
1) उपभोक्ता	दैनिक वस्तुओं को उपभोग करने वाला
2) उत्पादक	उत्पादन करनेवाला
3) विनियम	नियंत्रण, रोक
4) शोषण	श्रम का अनुचित लाभ उठाना
5) बाज़ार	जहाँ सामान का आदान प्रदान मूल्य के लिए होता है।
6) न्यायालय	अदालत
7) विक्रेता	सामान / वस्तु बेचने वाला
8) पर्यवेक्षण	निगरानी करने का काम
9) मुद्रित मूल्य	छापा हुआ मूल्य
10) कानून	विधान

मानस चित्रांकन :

सभी छात्रों को अपने विचारों को व्यक्त करने हेतु एक मानस चित्रांकन (विषय सम्बन्धित) तैयार करने को कहा गया। एक छात्र द्वारा तैयार किया गया चित्रांकन इस प्रकार है :

सांराशीकरण :

मानस चित्रांकन प्रस्तुत करने के बाद मानस चित्रांकन का सांराशीकरण प्रस्तुत किया गया है। इसके अन्तर्गत समूह चर्चा कर विद्यार्थी स्वयं अपनी कॉपी में लिखेंगे।

[*] समूहचर्चा एवं प्रस्तुतीकरण :

प्रत्येक समूह में से एक प्रतिनिधि को समूह द्वारा तैयार किया गया मानस चित्रांकन एवं सारांश को कक्षा में समझाने हेतु आमंत्रित किया गया।

[*] सुदृढ़ीकरण एवं पुनर्बलन :

विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह द्वारा मानस चित्रां-कन एवं सारांश प्रस्तुत करने के पश्चात शिक्षक द्वारा विषय की अवधारणा स्पष्ट होने में कमी को पूर्ण कर विद्यार्थियों के सहयोग से नया मानस चित्रांकन एवं सारांश प्रस्तुत किया गया।

[*] मानस चित्रांकन (आदर्श) :

P.T.O →

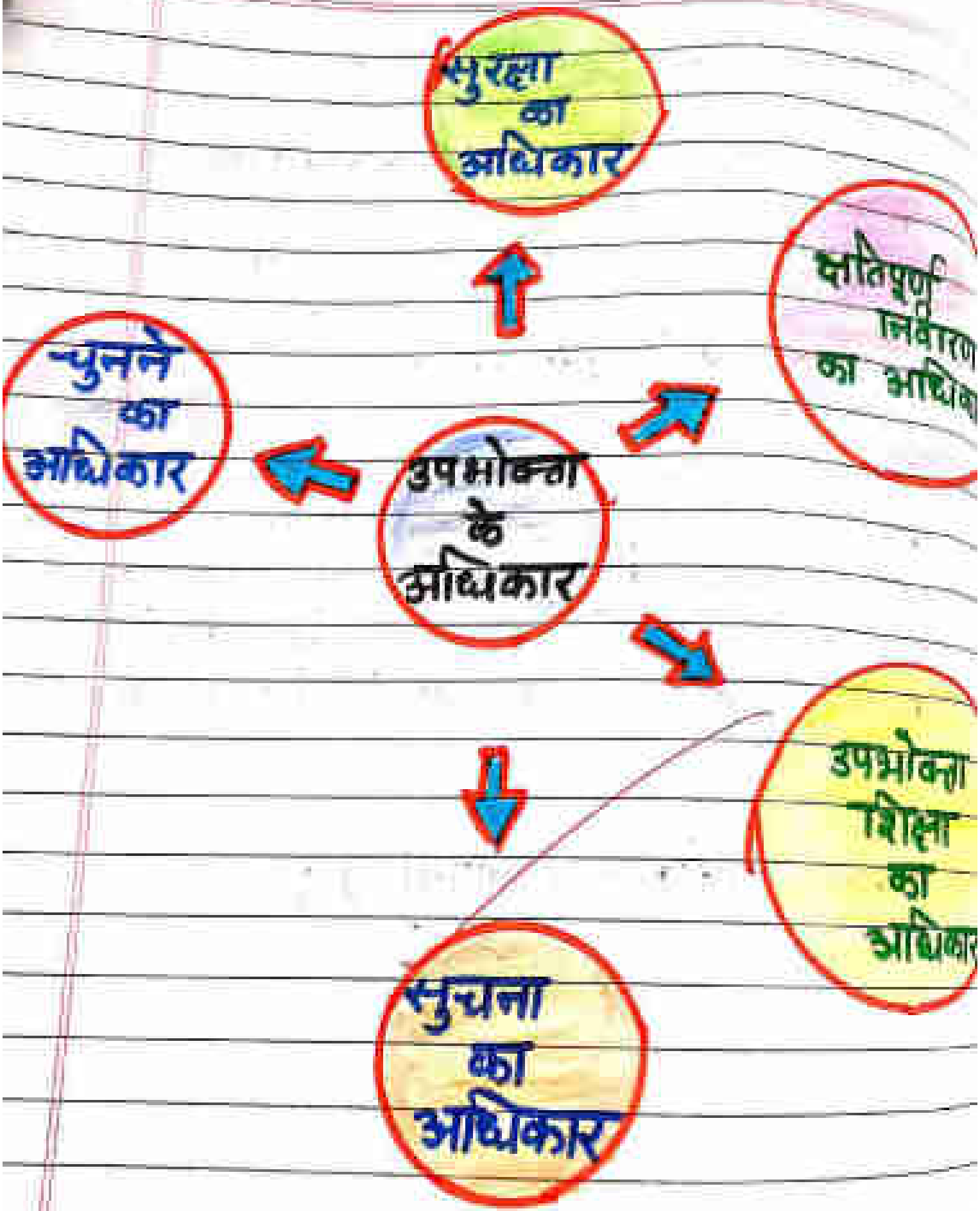

उपभोक्ता के अधिकार
सुरक्षा का अधिकार
क्षतिपूर्ण निवारण का अधिकार
उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार
सुचना का अधिकार
चुनने का अधिकार

[★] आकलन :

अध्याय समझाने के बाद विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न पूछे गए :

प्र०1) बाजार में नियमों तथा विनियमों की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

प्र०2) भारत में उपभोक्ता आंदोलन कि शुरुआत किन कारणों से हुई ?

प्र०3) दो उदाहरण देकर उपभोक्ता जागरूकता की आवश्यकता का वर्णन करें ?

प्र०4) उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम, 1986 के निर्माण की जरूरत क्यों पड़ी ?

प्र०5) उपभोक्ता के रूप में आपके क्या कर्तव्य हैं ?

[★] उपचारात्मक शिक्षण :

आंकलन के बाद बच्चों का परिणाम देख कर, जिन बच्चों को अध्याय संबंधित परेशानी या कुछ समझ नहीं आने पर, उन्हें पुनः

समझाया व अभ्यास कराया जायेगा।

1) पाठ से सम्बन्धित त्रुटियों को सुधारा जायेगा।

2) आवश्यकता अनुसार उदाहरण के माध्यम से समझाया जाएगा।

3) महत्वपूर्ण तथ्यों को कॉपी में लिखने को कहा जाएगा।

[*] लेखन कार्य / गृह कार्य :

1) खाद्य सामग्री खरीदते समय आप कौन सा चिन्ह पैकेट पर देखेंगे और क्यों?

2) उपभोक्ताओं के कुछ अधिकारों को बताएँ।

विषय शिक्षक के हस्ताक्षर | पर्यवेक्षक हस्ताक्षर | छात्राध्यापक हस्ताक्षर

PRASHANTI COLLEGE OF PREFESSIONAL STUDIES, UJJAIN

VIKRAM UNIVERSITY UJJAIN (M.P.)

SESSION -2019-20

B.ED III SEMESTER

SUBJECT :- EPC- 7 - UNDERSTANDING OF ICT

SUBMITTED TO :-

DR. VARSHA TIWARI MADAM

SUBMITTED BY:-

SANGEETA PEDWA

CERTIFICATE

This is to certify that SANMOTA PATWA [illegible] in XI Science in year [illegible] of this Institute has successfully the Project on the topic [illegible] of [illegible] as subject of [illegible].

[illegible] result of it is that she [illegible] under guidance of

Internal Examiner
Signature

External Examiner
Signature

ACKNOWLEDGEMENT

I would like to express my special thanks and gratitude to my teacher Principal as well as who gave me the golden opportunity to do this wonderful project which also helped me in doing a lot of research and learning a lot of new things in the process.

I would like to thank my parents and my friends for helping me to complete this project of their cooperation.

॥ श्री ॥

अनुक्रमणिका

1 कम्प्यूटर क्या है? कम्प्यूटर के प्रकार एवं पीढ़ियों की व्याख्या करें? (वर्ग, लाभ एवं तकनीकी)

2 विन्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम में आप निम्नलिखित कार्यों को कैसे करेंगे? समझाइये?

Cut, Copy and Paste
Create a folder and Shortcut
Send a folder into floppy disk

3 विन्डोज XP ऑपरेटिंग सिस्टम में नेटवर्किंग की सुविधा कैसे प्रदान की जाती है?

4 एम. एस. वर्ड में निम्न को समझाये।

Editing of a document
Paragraph formatting
Character formatting

5 एम. एस. वर्ड में मेल मर्ज की प्रक्रिया को Envelope तथा Mailing list को प्रिंट करने के लिए उदाहरण सहित समझाइये?

6 विभिन्न आवश्यक DOS command को समझाये?

7 एम. एस. एक्सेल में प्रायोगिक व सैद्धान्तिक मूल्यांकन के आधार पर की कक्षा के पांच विद्यार्थियों की मार्कशीट तैयार कीजिए।

8 इस एक ऑटोमोबाइल में एक सैद्धांतिक ऑपरेशन तैयार कीजिए जिस के आधार पर वर्गीकरण, आवश्यक एवं चयनित. डिजाइन तथा इंजीनियरिंग

9 विभिन्न लेन टेक्नोलॉजी का वर्णन कीजिए।

10 समझाइये-

1) स्टीयरिंग प्रोसेस

2) आल्टरनेटर

3) कार्बोरेटर

4) डिस्ट्रिब्यूटर

5) मॉडेम

उत्तर: "कम्प्यूटर" का तात्पर्य एक ऐसे यन्त्र से है, जिसका प्रयोग गणना, प्रक्रिया, टेक्नोलॉजी, अनुसन्धान, खेल आदि कार्यों में किया जाता है। कम्प्यूटर, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का समायोजन है, जो डेटा को सूचना में बदलता है।

कम्प्यूटर की आर्किटेक्चर से तात्पर्य कम्प्यूटर की आंतरिक संरचना से है। कम्प्यूटर के आंतरिक भागों के कार्यों तथा उनके आवश्यक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए कम्प्यूटर की संरचना का अध्ययन आवश्यक है।

कम्प्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है, जो डेटा और निर्देशों को इनपुट की तरह लेता है तथा इन्हें आवश्यकतानुसार स्टोर करके निर्देशों के अनुसार डेटा पर प्रोसेस करता है और आउटपुट के रूप में परिणाम देता है।

कम्प्यूटर का वह भाग जो निर्देशों और डेटा को लेता है उसे इनपुट डिवाइस या इनपुट यूनिट कहते हैं। कम्प्यूटर का वह भाग जो सूचना को निर्देशों तथा डेटा के रूप में स्टोर करता है वह मेमोरी यूनिट कहलाता है।

कम्प्यूटर के अंदर स्टोर डेटा की प्रोसेसिंग सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट के द्वारा की जाती है संक्षेप में इसे सी.पी.यू. कहते हैं। और इसे कम्प्यूटर के अंदर का मर्म और वर्क सेन्टर भी कहा जाता है।

आधुनिक कम्प्यूटर में सी.पी.यू. में सम्मिलित मेमोरी होती है अंत में वो यूनिट यूज़र को रिजल्ट (परिणाम) देती है, जो आउटपुट डिवाइस या आउटपुट यूनिट कहते हैं।

इनपुट तथा आउटपुट डिवाइस को I/O डिवाइस कहते हैं। इन्हें पेरीफेरल यूनिट भी कहते हैं जो मनुष्य व कम्प्यूटर के मध्य संचार प्रदान करती हैं।

॥ ६ ॥

कम्प्यूटर एक प्रोग्रामेबल इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है, जो अंकगणितीय या तार्किक ऑपरेशन्स को तीव्र गति से सम्पन्न करता है या फिर सूचनाओं को एकत्रित, संग्रह, संयुक्त या प्रोसेसिंग करता है। कम्प्यूटर एक बहुउपयोगी उपकरण है, जो कोई भी कार्य कर सकता है, परन्तु सामान्य रूप से सभी कम्प्यूटर निम्नलिखित पाँच ऑपरेशन्स करते हैं:

1. इनपुटिंग
2. स्टोरिंग
3. प्रोसेसिंग
4. आउटपुटिंग
5. कंट्रोलिंग

अतः कम्प्यूटर एक ऐसी इलेक्ट्रॉनिक युक्ति या मशीन है, जो डाटा एवं सूचनायें ग्रहण करता है, और प्रोसेसिंग करता है, दिए गए निर्देशों के अनुरूप उन्हें संचालित करता है एवं प्राप्त उपयोगी परिणाम वांछित रूप में प्रदर्शित करता है।

कम्प्यूटर के प्रकार

कम्प्यूटर को उनके आकार, गति, उपयोगिता, संग्रह क्षमता, जुड़े हुए उपकरण एवं कीमत आदि के आधार पर माइक्रो कम्प्यूटर, मिनी कम्प्यूटर, मेन फ्रेम कम्प्यूटर व सुपर कम्प्यूटर में वर्गीकृत किया जाता रहा है। ये सभी विविधताएँ सिर्फ व आरोही क्रम से तकनीकी प्रभाव युक्त किन्तु तकनीक पर आधारित है।

1. सुपर कम्प्यूटर
2. मेनफ्रेम कम्प्यूटर
3. मिनी कम्प्यूटर
4. माइक्रो कम्प्यूटर

॥ॐ॥

3) मेनफ्रेम कम्प्यूटर

4) माइक्रो कम्प्यूटर

तकनीकी के आधार पर
कम्प्यूटर
के
प्रकार

1. एनालॉग कम्प्यूटर

2. डिजिटल कम्प्यूटर

3. हाइब्रिड कम्प्यूटर

1. सुपर कम्प्यूटर

सुपर कम्प्यूटर बहुत शक्तिशाली उच्च कार्यक्षमता एवं अधिक भण्डारण क्षमता वाले कम्प्यूटर होते हैं। इनका उपयोग बहुत वैज्ञानिक अनुसंधानों में किया जाता है ये मल्टीप्रोसेसिंग, पैरलल प्रोसेसिंग भी काफी तेज गति से करते हैं।

इनका उपयोग वैज्ञानिक एवं इंजीनियरिंग समस्याओं जहाँ बहुत अधिक संख्या में एवं तीव्रता से गणितीय गणनाओं की आवश्यकता होती है में किया जाता है। इसके कुछ उपयोग होते हैं मौसम की भविष्यवाणी, कम्प्यूटेशनल फ्लूइड डायनामिक्स, पेट्रोलियम इंडस्ट्रीज, अंतरिक्ष विज्ञान, बायोमेडिकल उपयोग, आणविक परीक्षण इत्यादि।

कुछ प्रमुख सुपर कम्प्यूटर है-

CRAY

Cray-XMP,

Cray-2

IBM-3090.

NEC-SX-3

Hitachi (S Series)

2. मेनफ्रेम कम्प्यूटर -

मेनफ्रेम कम्प्यूटर 32 बिट या अधिक वाले मिनी एवं मिनी कम्प्यूटर से अधिक शक्तिशाली एवं बड़े आकार वाले कम्प्यूटर हैं चूंकि यह कई उपयोगकर्ताओं को एक साथ कार्य करने के लिए बहुत अधिक संख्या में टर्मिनल लगाने में सक्षम है इनका उपयोग बड़े बड़े संस्थानों में जहाँ बहुत अधिक डाटा प्रयुक्त होता है जैसे रेल्वे, वायुयान आरक्षण सिस्टम में, बड़े बैंकिंग संस्थानों में इनका बहुत उपयोग होता आ रहा है। इनका उपयोग डिस्ट्रिब्यूटेड डाटा प्रोसेसिंग सिस्टम में केन्द्रीय होस्ट कम्प्यूटर के रूप में भी होता है। कुछ प्रमुख मेनफ्रेम कम्प्यूटर है.

MEDHA

IBM

HP

ICL

Secry इत्यादि

3. मिनी कम्प्यूटर.

मिनी कम्प्यूटर एक मध्यम (medium) आकार का माइक्रो कम्प्यूटर से अधिक शक्तिशाली एवं अधिक कीमत का बहुउद्देशीय कम्प्यूटर 80 के दशक के अंत तक माना जाता था। इस तरह के कम्प्यूटर में एक से अधिक उपयोगकर्ता भी कार्य कर सकते हैं एवं इनमें कई बाहरी उपकरण जोड़े जा सकते हैं एक 16 बिट मशीन होती थी। यह उस समय के सर्वाधिक प्रचलित डाटा प्रोसेसिंग सिस्टम हुआ करते थे। सबसे प्रथम प्रचलित 32 बिट सुपर मिनी कम्प्यूटर था जो संचालन क्षमता एवं गति में मिनी कम्प्यूटर से अधिक शक्तिशाली था।

2. पर्सनल कम्प्यूटर-

पर्सनल कम्प्यूटर माइक्रो कम्प्यूटर होते हैं। IBM कम्पनी द्वारा बनाये गये PC IBM PC कहलाते हैं एवं अन्य उत्पादक कम्पनी के माइक्रो का उपयोग करते हुए जो कम्प्यूटर बनाते हैं वे IBM कम्पेटिबल PC कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त एप्पल कम्प्यूटर कम्पनी के द्वारा भी PC बनाये जाते हैं जो मैकिन्टोश PC कहलाते हैं। इनके माइक्रो प्रोसेसर पर आधारित होते हैं। PC में MS-DOS या WINDOWS ऑपरेटिंग सिस्टम प्रयुक्त किया जाता है।

3. लैपटॉप कम्प्यूटर-

लैपटॉप कम्प्यूटर पर्सनल कम्प्यूटर होते हैं जो साइज़ में एक ब्रीफकेस के आकार के एवं काफी हल्के होते हैं। इन्हें नोटबुक कम्प्यूटर भी कहा जाता है। इसमें साधारण कम्प्यूटर की तरह कीबोर्ड एवं हार्ड डिस्क होती है। डाटा देखने के लिए LCD स्क्रीन का उपयोग किया जाता है, ये काफी कम ऊर्जा में चलते हैं, एवं इन्हें बैटरी के द्वारा चलाया जाता है। इसका उपयोग प्रयोगशाला, यात्रा इत्यादि के दौरान वर्ड प्रोसेसिंग, स्प्रेडशीट कम्प्यूटिंग इत्यादि कार्यों के लिए करते हैं ये DOS या WINDOWS ऑपरेटिंग सिस्टम के द्वारा चलाये जाते हैं एवं इन्हें नेटवर्क के द्वारा भी जोड़ा जा सकता है।

4. माइक्रो कम्प्यूटर-

यह एक बहुउद्देशीय सस्ता छोटा सम्पूर्ण कम्प्यूटर सिस्टम होता है जिसमें सम्पूर्ण CPU एक अकेले चिप जिसे माइक्रो प्रोसेसर कहा जाता है में होता है। इसमें एक समय में केवल एक उपयोगकर्ता कार्य कर सकता है माइक्रो कम्प्यूटर सत्तर के दशक के अंत में बनाये गये थे। सबसे पहला माइक्रो कम्प्यूटर 8 बिट माइक्रो प्रोसेसर चिप द्वारा निर्मित किया गया। 8 बिट चिप से अभिप्राय यह है कि यह चिप एक समय में 8 बिट के आंकड़े एवं निर्देशों को ग्रहण, संग्रह

कम्पीटर और तेल पर नियंत्रण कर रखता है।

पर्सनल कम्प्यूटर किसी भी तरह कम्प्यूटर द्वारा किये जाने वाले कार्य करने में सक्षम है, क्योंकि इसमें सभी आवश्यक भाग एवं सब सुविधा प्राप्त होती है।

तकनीकी
के
आधार
पर
कम्प्यूटर

1- एनालॉग कम्प्यूटर Analog Computer

2- डिजिटल कम्प्यूटर Digital Computer

3- हाइब्रिड कम्प्यूटर Hybrid Computer

1- एनालॉग कम्प्यूटर —

इस प्रकार के कम्प्यूटर का प्रयोग विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। इसे हम एनालॉग कम्प्यूटर भी कहते हैं। एनालॉग शब्द ग्रीक भाषा से लिया है, जिसका अर्थ है दो राशियों में समानता स्थापित करना। ये कम्प्यूटर मापने की युक्ति पर आधारित होते हैं। भौतिक रूप से उपलब्ध आँकड़ों पर कार्य करते हैं, एनालॉग कम्प्यूटर कहलाते हैं। अर्थात् यह विभिन्न राशियों को अंकों में परिवर्तित न करके सीधे ही इनपुट करते हैं। इनमें सभी संकेत सतत रूप में होते हैं, चाहे वह इनपुट हो या आउटपुट।

2. Digital Computer – डिजिटल कम्प्यूटर जैसा कि नाम से पता चलता है कि ये संख्याओं पर आधारित होते हैं अर्थात इस प्रकार के कम्प्यूटर डिजिटल संख्याओं पर आधार इनको गणना कार्य करते हैं डिजिटल कम्प्यूटर कहलाते हैं। इन कम्प्यूटरों में इनपुट अंक रूप में हो सकता है। इस प्रकार के कम्प्यूटर का प्रयोग सबसे ज्यादा होता है। यह डाटा, आंकड़ों को बाइनरी के रूप में ही ग्रहण करता है अर्थात 0 से 1 के रूप में स्वीकार करता है। यह कम्प्यूटर विभिन्न प्रकार की समस्याओं को हल करने में सक्षम है तथा परिणाम भी शुद्ध ही प्रदान करता है।

3. Hybrid Computer – वे कम्प्यूटर जिनमें एनालॉग व डिजिटल दोनों प्रकार के कम्प्यूटर की विशेषताएँ और गुण उपस्थित हो, हाइब्रिड कम्प्यूटर कहलाते हैं। इन्हें संकर कम्प्यूटर भी कहा जाता है।

कम्प्यूटर
की
पीढ़ी
पीढ़ियाँ

कम्प्यूटर के विकास की विभिन्न अवस्थाओं को कम्प्यूटर की पीढ़ी कहा जाता है। पीढ़ी शब्द मुख्यतः कम्प्यूटर में प्रयोग किए गए उपकरणों की विकास को दर्शाता है। इन विकासों ने कम्प्यूटर को क्रमशः आकार में छोटा, तेज गति का सस्ता एवं उपयोग सरल किया, लेकिन ये विकास इतने लगातार हुए कि किसी एक स्पष्ट समय या घटना को एक नई पीढ़ी की शुरुआत कहना मुश्किल है, लेकिन प्रत्येक पीढ़ी के कम्प्यूटर अपनी पिछली पीढ़ी की तुलना में निम्न बिन्दुओं पर बेहतर थे–

* छोटे प्रकार
* अधिक स्टोरेज आदि

अधिक मेमोरी क्षमता
* डाटा की अधिक क्षमता

अधिक तेज गति
* काम एक साथ की आवश्यकता

अधिक प्रभावशाली क्षमता -

(1) पहली पीढ़ी के कम्प्यूटर - 1945-1955

आधुनिक कम्प्यूटर का युग 1946 से ENIAC - [Electronic Numerical Integrator and Calculator] कम्प्यूटर के आविष्कार का आरंभ हुआ। लगभग इसी समय UNIVAC रेमिंगटन रैण्ड Remington Rand द्वारा निर्मित कम्प्यूटर व्यावसायिक उपयोग में आया। इस पीढ़ी के कम्प्यूटरों की सबसे बड़ी विशेषता निर्वात ट्यूब (Vacuum Tube) का प्रयोग में आया। इस पीढ़ी के कम्प्यूटरों की सबसे बड़ी विशेषता वैक्यूम ट्यूब का प्रयोग किया जाता था।

निर्वात ट्यूब उस समय उपलब्ध प्रधान इलेक्ट्रॉनिक अवयव था अतः इसके उपयोग से पहला इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर बनना संभव हुआ जिसमें नियंत्रण एक केन्द्रीय इकाई CPU के द्वारा होता था। इसके साथ ही कम्प्यूटर के भाव स्टोरेज आर्किटेक्चर का आरंभ हुआ।

जिसका उपयोग आज तक के कम्प्यूटरों में हो रहा है। इस

तीसरी पीढ़ी के कम्प्यूटर

1964-75

पहली दो पीढ़ी के कम्प्यूटर अलग अलग उपकरणों (ट्रांजिस्टर, कैपेसिटर, रजिस्टर निर्मित आदि) जोड़कर बनाये जाते थे जिसमे किसी भी एक उपकरण के खराब होने पर पूरे [illegible] ढूँढकर कार्य होता था, तीसरी पीढ़ी के कम्प्यूटरों में अलग-अलग उपकरणों का स्थान इन्टीग्रेटेड सर्किट ने लिया। इन्टीग्रेटेड सर्किट में अलग-अलग उपकरण जैसे ट्रांजिस्टर, रजिस्टर, कैपेसिटर, गेट्स इत्यादि सैकड़ो की संख्या में छोटे से सर्किट [illegible] सिलिकॉन चिप्स के आकार में समाहित कर बनाये जाते है। इस तरह कम्प्यूटर का आकार छोटा करने में मदद मिलती है। इस पीढ़ी के कम्प्यूटर पहले से दूसरी पीढ़ी की तुलना में अधिक विश्वसनीय हो चुके है क्योंकि अब कार्य करने वाली सर्किट [illegible] में विभिन्न उपकरणों को अलग-अलग जोड़ने की आवश्यकता नहीं रही।

चौथी पीढ़ी के कम्प्यूटर

1975-1989

चतुर्थ पीढ़ी के कम्प्यूटर में प्रयुक्त इन्टीग्रेटेड सर्किट में 10 ट्रांजिस्टर प्रति चिप से [illegible] ट्रांजिस्टर प्रति चिप तक समाया जाता था इसे SSI Small Scale Integration कहा जाता है जिसमें 30,000 ट्रांजिस्टर [illegible] प्रति चिप VLSI है। [illegible] नई तकनीकी [illegible]

[illegible] LSI = Large Scale Integration [illegible]

जैसे चिप VLSI (Very Large Scale Integration
इंटीग्रेटेड एवं सेंटर चिप तथा VLSI

Large Scale Integration जिसे
इंटीग्रेटेड एवं सेंटर चिप हजारों रख सकते हैं का निर्माण
संभव हुआ। एक सम्पूर्ण CPU जिसे माइक्रो प्रोसेसर कहा जाता है
एक छोटे से सिलिकॉन चिप पर रखा सकता है।

1) अत्यधिक तेज गणना
2) अधिक विश्वसनीयता
3) अधिक पोर्टेबिलिटी
4) कम ऊष्मा उत्पन्न करना अतः वायु अनुकूलन की आवश्यकता नहीं।
5) नेटवर्किंग एवं सामान्य रूप से बहुत उपयोगी।
6) अपेक्षाकृत सस्ते।

5) पाँचवीं पीढ़ी के कम्प्यूटर

1989- अब तक

प्रयोगात्मक
अवस्था में होने के कारण पाँचवीं पीढ़ी के बारे में कुछ कहना मुश्किल है। फिर भी इस पीढ़ी के कम्प्यूटर में निम्न विशेषताएँ अनुमानित हैं:

1) मानव स्वर समझना
2) प्रयोगकर्ता द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर बुद्धिमत्ता से देना,

एक स्थान को कार्य बहुत।

"कम्प्यूटर के स्वचालन माध्य से संचा[illegible]

[illegible] बहुत।

प्र. 8

विन्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम

[illegible] निम्नलिखित कार्यों को कैसे करते हैं समझाइये

Cut, Copy and Paste.

Create a Folder and Shortcut.

Send a Folder into Floppy disk.

उत्तर –

कम्प्यूटर एक ऐसा इलेक्ट्रॉनिक [illegible]

[illegible] प्रत्येक गणितीय कार्यों को सम्पादन करते हुए मानव की आवश्यकता [illegible]

[illegible] स्वचालित रूप से करने में सक्षम है यह द्वारा कंट्रोल करने के

[illegible] लेकिन इसके प्रबंधन और विभिन्न परिस्थितियों के लिए निर्णय

[illegible] का कार्य भी करता है लेकिन इन सभी कार्यों को हार्डवेयर डिवाइस

[illegible] सम्पादन किया जाता है, इसलिए मानव और हार्डवेयर के मध्य सम्पर्क

[illegible] स्थापित करने के लिए इसमें सॉफ्टवेयर प्रोग्राम संग्रहित किए जाते

विन्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम (OS) एक ऐसा सॉफ्टवेयर प्रोग्राम है,

कम्प्यूटर की डिस्क पर संग्रहीत होता है और कम्प्यूटर का [illegible]

[illegible] करने पर इसकी मेमोरी में रन जाता है तथा मानव द्वारा प्रदत्त

[illegible]-भाषा के निर्देशों के अनुसार कार्य करता है।

ऑपरेटिंग सिस्टम अन्य सभी इन्फॉर्मेशन प्रोसेसिंग प्रणाली
... कराता है यह अन्य सॉफ्टवेयरों जैसे माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस,
... कोरल ड्रॉ पेज मेकर आदि पर कार्य करने के लिए
... उपलब्ध कराता है। जिन इन्फॉर्मेशन सॉफ्टवेयरों पर हम विण्डो
... कार्य करते हैं वे सभी स्क्रीन पर एक आयताकार ढांचे के अंतर्गत
... हैं इसी आधार पर इस सॉफ्टवेयर का नाम विण्डोज पड़ा है।

ऑपरेटिंग सिस्टम विण्डोज एक चित्र पर आधारित इंटरफेस है। पहले विण्डोज डॉस द्वारा रन हुए कम्प्यूटर का ... करती है डॉस पर कार्य करने के लिए प्रयोगकर्ता को अनेक कमाण्ड्स को याद करना पड़ता था इस परेशानी को ध्यान में रखते हुए माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन ने विण्डोज को ऑपरेटिंग सिस्टम के रूप में प्रस्तुत करते हुए विण्डोज 95 को विकसित किया। इसमें ... कमाण्ड्स को मेन्यू के अंतर्गत विकल्पों के रूप में दिखाया ... इन कमाण्ड्स का प्रयोग करने के लिए इनको माउस अथवा ... अन्य प्वाइंटिंग डिवाइस से चुनना होता है इसी दौरान इन्टरनेट ... विण्डोज लोगों के सामने आया।

इस विण्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम में निर्देश टाइप करने की असुविधा को खत्म कर दिया जाता है। यह ग्राफिकल ... की सुविधा प्रदान करता है अर्थात यहाँ पर ग्राफिकल यूजर ... रूप में USER SCREEN पर चित्र रूप में प्रोग्रामों के आइकन ... मेन्यू के निर्देशों को दर्शाता है।

GUI के आइकन को हम माउस द्वारा चुनते हैं एवं क्रियान्वित करते हैं।

विन्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम

विशेषताएँ –

1. विन्डोज 98 में स्टैंडबाई / हार्डडिस्क पर काम न करने पर कुछ निश्चित समय के बाद स्वतः ही बन्द करने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है, जैसे यदि हम कम्प्यूटर का काम निलम्बित करते हैं, अर्थात कम्प्यूटर ऑन है और कम्प्यूटर पर कोई कार्य नहीं किया जा रहा है, तो यह निश्चित समय बाद स्वतः ही बन्द हो जाता और आवश्यकता पड़ने पर केवल "स्पेस" की" को दबाकर कार्य कर सकते हैं।

2. कम्प्यूटर के हार्डवेयर और प्रिंटर C.P.U. आदि ऑन करते ही विन्डोज का डेस्कटॉप प्रदर्शित करता है। विन्डोज के विभिन्न डेस्कटॉप पर विभिन्न वांछित एवं आवश्यकता प्रोग्राम को आइकन के रूप में रखकर इनका क्रियान्वयन आसानी से शीघ्र ही किया जा सकता है। ये आइकन प्रोग्राम के शॉर्टकट कहलाते हैं।

3. विन्डोज में हम किसी भी प्रोग्राम या कमाण्ड का शॉर्टकट बनाकर आइकन के रूप में डेस्कटॉप पर रख सकते हैं।

4. विन्डोज जी.यू.आई. पद्धति पर आधारित ऑपरेटिंग सिस्टम है। इसमें दिए जाने वाले सभी कमाण्डों के लिए स्क्रीन पर ग्राफिक्स सॉफ्टवेयर चित्र आइकन करते हैं, जो Desk Top पर बने होते हैं। अतः MS-DOS की तरह कमाण्डों को की-बोर्ड की सहायता से टाइप करने की अपेक्षा माउस द्वारा क्लिक करने से ही उपयोग में ला सकते हैं।

विण्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम के कार्य

एडिट मेनू के अन्तर्गत आइटम में परिवर्तन व सम्पादित कोई कार्य करने के लिए एडिट मेनू का उपयोग किया जाता है।

Cut, Copy and Paste

Cut – किसी भी टेक्स्ट को फाइल अथवा डॉक्यूमेंट से हटाने के लिए हम Cut विकल्प का उपयोग करते हैं कि बोर्ड की Ctrl+X- की के प्रयोग से भी हम Cut कमाण्ड प्रयोग में ला सकते हैं।

Copy – एडिट मेनू के इस कमाण्ड का प्रयोग किसी भी डॉक्यूमेंट या टेक्स्ट (Matter) की कॉपी करने के लिए करते हैं।

Paste – PASTE से अभिप्राय है चिपकाना। किसी भी कॉपी अथवा कट किए गए टेक्स्ट को किसी अन्य स्थान पर फिट करना। चिपकाना ही पेस्ट होता है। अतः एडिट मेनू के इस कमाण्ड का प्रयोग टेक्स्ट को पेस्ट करने के लिए किया जाता है।

Create a folder and Shortcut

॥ ४ ॥

Computer में New Folder
कैसे बनाये-
How to create
new folder
in
Computer?

Folder यानि Computer के एक Store location है जिसे हम अपना Data Store करते है यह Data files, Images, Videos आदि Format में हो सकता है।

Folders हमारे Data को Store करने के लिए हमारे [illegible] जगह (Store Location) है। हम किसी विशेष प्रकार Single Data के हिसाब से Folder का नामकरण कर सकते है।

और इसे जब चाहे तब आसानी से देख सकते है। हम एक जगह पर कितने भी Folder Create कर सकते है। और एक Folder के भीतर कितने भी Sub folder Create कर सकते है।

नये Folder बनाने के फायदे

1. Computer Hard Drive में नया Folder बनाकर इसमें Data Store किया जा सकता है. हम एक प्रकार के डाटा को एक ही नये फोल्डर में रख सकते है जैसे, हम सारे Videos को एक My Videos नाम से नया फोल्डर बनाकर उसमें Store कर सकते है हम चाहे [illegible] फोल्डर के भीतर भी एक नया फोल्डर बनाकर अपने Videos Subject wise छांटकर रख सकते है।

जब हम Folder के अंदर कोई नया फोल्डर बनाकर उसका [illegible] Sub-Folder कहते हैं और 'My Videos' फोल्डर के [illegible] Hungama Videos नाम का फोल्डर बनाते हैं, तो वह [illegible] वीडियो नाम फोल्डर बनाते हैं, जो उस 'Hungama Videos' [illegible] वीडियो फोल्डर का — Sub-Folder है।

Videos की तरह ही हम अपनी सभी Pictures [illegible] 'My Pictures' नाम से नया फोल्डर बनाकर उनमें Save कर सकते हैं यहाँ उनके बाद Various Photos के अनुसार [illegible] प्रकार का Folder है, तो इसे भी नया Folder बनाकर Save किया जा सकता है।

Folder में हमारे Total Data को विषयवार — Subject Wise व्यवस्थित रखने में मददगार है, जब कम्प्यूटर में Data Subject-Wise व्यवस्थित रहता है तो उस Data को दुबारा ढूंढकर करने में हमें ज्यादा समय नहीं लगता है हम किसी भी Subject को तुरंत खोल लेते हैं।

ऊपर बताए गए फायदों का इस्तेमाल तभी कर सकते हैं, जब हमें सही तरह से नया फोल्डर बनाना आता हो, तो क्या आप तैयार हैं, इसके लिए नया फोल्डर बनाने को ?

इंतजार कहाँ है !
तो
चलिए इधर और हम मिलकर
नया फोल्डर बनाते हैं।

इस Internet के दौर में आपको New Folder create करने के कई तरीकों के बारे में मालूम होगा, हर Internet user को सब, [illegible] से New Folder create कर [illegible] Create करने के तरीकों के बारे में और [illegible] से बताया जा रहा है

KEY-BOARD SHORTCUT से नया Folder बनाना

New Folder create करने का सबसे सरल और तेज तरीका है — Key board Shortcut का उपयोग करना.

आइए जानते है New Folder create करने के लिए किस Keyboard Shortcut का उपयोग किया जाता है.

Key board Shortcut से New Folder

1. सबसे पहले आप जहाँ पर भी New Folder create करना चाहते है उस जगह पर जाए आप चाहे तो हमारी तरह Desktop का उपयोग कर सकते है-
2. फिर की-बोर्ड से Ctrl + Shift + N एक साथ दबाएं.

इसके बाद फोल्डर का जो नाम आप देना चाहते है वो टाइप करे और Enter दबाये

इस तरह भी तरीका से आप New folder create कर सकते हो जायगा

Right click के द्वारा नया फोल्डर बनाना

इसके अलावा आप स्क्रीन पर भी New folder create करना चाहते है या स्क्रीन पर खाली जगह पर Desktop बना सकते है.

इसके बाद किसी खाली जगह पर Mouse का दाया बटन Right click दबाये.

Right click करने पर आपके सामने " Right click menu " खुल जायगा।

जिसमें से आपको पहले New और इसके बाद Folder पर क्लिक करनी है.

इसके बाद फोल्डर का जो नाम आप देना चाहते है वो लिख और Enter दबाये या फिर आप बाहर क्लिक कर सकते है और आपके सामने New फोल्डर Create हो जायगा

Sort a Folder

auto

Floppy disk

Floppy disk एक प्रकार के magnetic storage medium होते है computer system का भी एक floppy disk के data को manual और check करने के लिए अपने computer system में एक floppy disk drive add करते होना चाहिए. पहले के समय में floppy disks का इस्तेमाल computer के operating system को store किया जाता था लेकिन अब floppy disk की आवश्यकता कि जरूरी।

कम्प्यूटर में बनायी जाने वाली फाइलें किसी माध्यम पर स्टोर किया जाता है. जैसे हार्ड डिस्क, फ्लॉपी डिस्क आदि फाइलों को स्टोर किया जाता है।

किसी फ्लॉपी को चुम्बकीय ट्रैक और सेक्टर में बांटकर कार्य के लिए तैयार करना फॉर्मेटिंग कहलाता है. अगर आप नयी फ्लॉपी का उपयोग कर रहे है तो पहले उसे फॉर्मेट करना आवश्यक होता है. Formatting के बाद ही हम उसमे फाइल सेव कर सकते है।

फ्लॉपी डिस्क का वर्गीकरण उसकी साईज के आधार पर किया जाता है-

8-इंच फ्लॉपी 8-inch floppy

5 1/4 इंच फ्लॉपी 5 1/4-inch floppy

विंडोज XP ऑपरेटिंग सिस्टम में नेविगेशन की सुविधा कैसे प्रदान की जाती है?

विंडोज एक्सप्लोरर की विंडो का बायाँ हिस्सा [illegible] भागों में बंटा होता है। बायाँ और दायाँ भाग में बंटा होता है। बायाँ और बायें भाग में ही सिस्टम के सभी विभिन्न फोल्डर्स का प्रदर्शन होता है और दायें भाग में चुनी गई ड्राइव अथवा फोल्डर में स्थित फाइलों अथवा फोल्डर्स का प्रदर्शन होता है। बायें भाग में चुने गये फोल्डर का नाम Address बार में प्रदर्शित होता है साथ ही यह नाम इसके टाइटल बार में प्रदर्शित होता है। दायें भाग में फाइलों एवं फोल्डर्स के प्रदर्शन की शैली आवश्यकतानुसार एवं इच्छा के अनुरूप बदला भी जा सकता है।

विंडोज एक्सप्लोरर की विंडो में टाइटल बार के नीचे मेन्यू एवं टूलबार प्रदर्शित होती है। इन दोनों के नीचे Address बार का प्रदर्शन होता है।

इस विंडो के दायें भाग में फाइल्स एवं फोल्डर्स का प्रदर्शन बदलने के लिए इस विंडो की टूलबार पर Views बटन पर क्लिक करने से यह प्रदर्शन बदल जायेगा। इस विंडो में फाइल एवं फोल्डर्स का प्रदर्शन चार प्रकार से होता है। प्रत्येक बार बटन पर क्लिक करने से इस विंडो के दायें भाग में स्थित फाइल एवं फोल्डर्स का प्रदर्शन बदलता रहेगा। इस बटन पर माउस पॉइंटर को लगाकर माउस बटन दबाये रखने पर अथवा इसके दायें ओर डाउन ऐरो पर क्लिक करने पर इन चारों प्रकार के प्रदर्शन की सूची प्रदर्शित होती है।

विंडोज एक्सप्लोरर में फाइल की कॉपी करना

विण्डोज एक्सप्लोरर में किसी फाइल को किसी दूसरे स्थान पर कॉपी करने के लिए उस विंडो के दाएँ भाग में उस फाइल को पेस्ट किया जाता है।

जब हम फाइल को किसी ड्राइव अथवा डायरेक्टरी से कॉपी करके ड्रैग करते हुए ले जाकर माउस बटन को छोड़ते ही फाइल को कॉपी करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इस कॉपी किए जाने की प्रोग्रेस स्क्रीन पर एक डायलॉग बॉक्स के रूप में प्रदर्शित होती है।

विण्डोज एक्सप्लोरर में फाइल को दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करना:

विण्डोज एक्सप्लोरर में फाइल को मूव करना अर्थात उसे मूल स्थान से हटाकर किसी अन्य नए स्थान पर स्थानांतरित करना कॉपी करने के समान ही है।

विण्डोज एक्सप्लोरर में File अथवा Folder को मिटाना:

विण्डोज एक्सप्लोरर में किसी File या Folder's को तीन प्रकार से मिटाया जा सकता है:

१. मिटाई जाने वाली File या Folder's को चुनकर की-बोर्ड पर Delete की को दबाकर मिटाई जाने वाली फाइल अथवा फोल्डर को चुनकर इस विंडो के टूलबार में स्थित Delete आइकन पर Click करके मिटाई जाने वाली File फोल्डर को चुनकर इस विंडो के Edit मेनू में से Delete विकल्प को चुनकर। विण्डोज एक्सप्लोरर किसी File को मिटाने से पूर्व प्रयोक्ता को चेतावनी देता है।

यदि हम चुनी गई File अथवा Folder को वास्तव में मिटाना चाहते हैं Yes अन्यथा No Button को दबा सकते हैं।

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥ ॐ ॥

Q.4 एम एस वर्ड मे डॉक्यूमेंट को समझाइये ?

1. Editing of a document
2. Paragraph Formatting
3. Character Formatting

Editing of a document in MS Word

एम एस वर्ड डॉक्यूमेंट में कुछ content टाइप करने के बाद आप अपनी आवश्यकता के अनुसार सुधार कर सकते है. डॉक्यूमेंट में नये content को जोड़ने के लिए उचित स्थान पर क्लिक करके वहां कर्सर को ले जाइए और टाइप करना प्रारंभ कर दीजिए।

आप देखेंगे कि Type किया जाने वाला नया content उस स्थान पर जुड़ रहा है और इस नये content के लिए स्थान बनाने के लिए उस स्थान के बाद का सारा content आगे खिसक रहा है।

यदि आप Document में से कोई content हटाना चाहते है तो आप अपने की बोर्ड की Delete तथा Backspace Key का प्रयोग करके ऐसा कर सकते है यदि आप एक-एक करके content को हटायेंगे तो इसमें अधिक समय लगेगा। इसके लिए आप जिस content को हटाना चाहते है उसे Select करके delete Key Press कर एक बार में ही हटा सकते हैं।

[illegible]

Paragraph Formatting
in
M.S. Word

Paragraph Formatting आपको पूरे पैराग्राफ के रूप में बदलाव की अनुमति देता है। इस सेट में आप पैराग्राफ Alignment, Tab, indent, line spacing, paragraph spacing आदि Set कर सकते हैं।

How to Change Paragraph Alignment

पैराग्राफ Alignment आपको यह Set करने की अनुमति देता है कि आप Texts को कैसे दिखाना चाहते हैं। इसके लिए Home Tab पर क्लिक करें। इसके Paragraph Group पर चार Alignment उपलब्ध होते हैं।

1) Left Align:- यह टेक्स्ट को आपके बाएँ मार्जिन के साथ Set कर देता है।

2) Center Align- यह Text को केंद्र में सेट कर देता है।

3) Right Align- यह टेक्स्ट को आपके दाएं मार्जिन के साथ सेट कर देता है।

4) Justified Align- यह टेक्स्ट को बाएं और दाएं मार्जिन दोनों की ओर कर देता है।

Character Formatting

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] कैरेक्टर फॉर्मेटिंग [illegible] है।

How to do Character Formatting in MS Word

फॉर्मेटिंग कमांड्स के ढेर सारे फीचर हैं जिनके द्वारा हम इनके [illegible] में बदलाव कर सकते हैं।

हम इनमें इन सभी फीचर को एक एक [illegible] और इन्हें बदलाव करने की पूरी प्रक्रिया को स्पष्ट करेंगे।

टाइप, रंगों आदि की दिखावट को सही सेटिंग द्वारा [illegible] जाता है।

How to Change font in MS Word

फॉन्ट को हम अपने [illegible] कर सकते हैं। सरल भाषा में आप इसे एक हैंड राइटिंग कह

[illegible] हैं। इसको [illegible] [illegible] [illegible] के अनुसार [illegible]

Format Menu के द्वारा
Formatting Toolbar के माध्यम से
Keyboard Shortcut से।

Format Menu के द्वारा

[illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] जाते हैं [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर क्लिक करें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर क्लिक करें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] के [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] में [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं और [illegible] पर क्लिक करें।

Formatting Toolbar के द्वारा

[illegible] को सेलेक्ट करें।
[illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] सेलेक्ट करें।

Key-board (Shortcut)

॥श्री॥

टेक्स्ट को सेलेक्ट करें।

Ctrl + Shift + F प्रेस करें।

ड्रॉप डाउन का प्रयोग कर मनचाहा फॉन्ट सेलेक्ट करें।

और फॉन्ट का आकार कैसे बदलें

How to Change font Size in Ms Word

जिस Text का आकार बदलना है उसे सेलेक्ट करें। फॉर्मेट मेनू के अंदर जाकर मैं जाएं वहाँ आपको font डायलॉग बॉक्स दिखेगा। वहाँ साइज बॉक्स के अंदर जाकर कोई भी साइज सेलेक्ट कर सकते हैं जिसके बाद आपको OK Click करना होगा।

How to Change font Style in Ms Word.

Font का ...बदलने के लिए फॉर्मेट मेनू के अंदर स्टाइल ऑप्शन्स को ...करें। और ड्रॉप डाउन मेनू के अंदर से कोई भी स्टाइल चुनें। ...काम द्वारा Ctrl+B और Ctrl+I दबा कर शॉर्टकट में भी ...कर सकते हैं।

मेल

इस युग वर्ष में लेखकों की रचनाओं को Electronic Mailing Server को वितरित करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

इस युग वर्ष में लेखकों की लिस्ट को Electronic तथा Mailing में वितरित करने के लिए जो उपाय करते Email कहलाती है।

E-mail का मतलब इलेक्ट्रोनिक मेल Electronic mail है यह ऐसी प्रणाली है जिसमें इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क द्वारा विभिन्न प्रकार के लिखित संदेशों का आदान-प्रदान किया जाता है।

ई-मेल द्वारा कई प्रकार की सामग्री उपलब्ध संदेश, चित्र, ग्राफिक्स, वीडियो विडियो इत्यादि भेजे जा सकते है इसमें डाकिये की आवश्यकता नहीं रहती है। यह बैठे-बिठाये संदेश तथा प्राप्त सामग्री हो जाती है।

ई-मेल में बहुत ही कम समय लगता है। तुरन्त प्राप्त हो जाता है - संदेश वास्तविक नहीं हो पाता है। ई-मेल पता के लिए जो स्क्रीन दिखायी देती है उस पर विविध शब्द दिखायी देते है।

To - इस भाग में जिसे पत्र भेजना चाहते है, ई-मेल एड्रेस लिखा जाता है।

जैसे -

Kalimaji@yahoo.com

Shruti123@Tooka.com

Neha16@yahoo.com.

भेजने व प्राप्त करने के मुख्य बिन्दु- इसके निम्नलिखित है

संदेश

...संदेश का प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ता का ई-मेल
...होना चाहिए।

ये ई-मेल पता किसी नेटवर्क या [illegible]
...का [illegible] होता है।

Shine@yahoo.com

Shashi 123@Indiatimes.com

Neha 16@yahoo.com

...कम्प्यूटर पर इन्टरनेट कनेक्शन होता है, उसी के द्वारा ई-मेल
...प्राप्त किया जा सकता है।

किस कम्प्यूटर पर संदेश भेजा

...यदि वह कम्प्यूटर बन्द कर दिया जाये तब भी इसका (सूचना)
...के मेल बॉक्स पर पहुँच जाती है और जैसे ही उपयोग-
...अपने कम्प्यूटर को इन्टरनेट से जोड़ता है तो यह सूचना उसके मेल
...से उसके सामने आ जाती है। इसी तरह उपयोगकर्ता अपनी सूचना
...संदेशों का आदान-प्रदान ई-मेल द्वारा कर सकते हैं।

ई-मेल द्वारा

...एक से अधिकतम व्यक्तियों को संदेश भेजा जा सकता है। ई-
...ग्रीटिंग कार्ड, फोटोग्राफ, [illegible] तथा आकार का भी
...प्रदान किया जाता है।

किस कम्प्यूटर पर संदेश भेजा गया है यदि
...कम्प्यूटर बन्द कर दिया जाये तब भी इसका (सूचना) उस कम्प्यूटर के
...बॉक्स पर पहुँच जाती है और जैसे ही उपयोगकर्ता अपने कम्प्यूटर
...इन्टरनेट से जोड़ता है तो यह सूचना उसके मेल बॉक्स से उसके सामने
...जाती है इसी तरह उपयोगकर्ता अपनी सूचना अथवा संदेशों का
...आदान-प्रदान ई-मेल द्वारा कर सकते हैं।

किसी कम्प्यूटर के द्वारा ई-मेल सुविधा प्राप्त होने के लिये (Internet Service Provider) [illegible] जाता है [illegible] सन्देश प्राप्त होते हैं [illegible] (Internet) [illegible] [illegible] सेवा [illegible] भी हो सकती है।

यदि आप [illegible] ई-मेल की सुविधा लेनी हो तो सर्वर (Internet) [illegible] [illegible] में स्थापित होना चाहिए। इसी प्रकार से [illegible] [illegible] आपका भी [illegible] इन्टरनेट सेवा का [illegible] है [illegible] [illegible] इन्टरनेट से टेलीफोन, [illegible] [illegible] या ISDN के द्वारा [illegible] की सुविधा हो, तभी [illegible] [illegible] [illegible] सकते हैं [illegible] [illegible] है। इसके [illegible] ई-मेल के लिए [illegible] [illegible] [illegible] भी [illegible] कम्प्यूटर के पास होना चाहिए।

ई-मेल पते-

किसी को भी सन्देश भेजने के लिए उसका ई-मेल पता मालूम होना चाहिए। इन्टरनेट पर सामान्यतः ई-मेल [illegible] निम्न प्रकार से लिखा जाता है-

ई-मेल-पता (i) [illegible]-नाम

[illegible] [illegible] [illegible] है। ई-मेल प्रयोग करने वाले व्यक्ति का [illegible] (Log-in-Name) [illegible] यह नाम वो [illegible] [illegible] [illegible] सर्वर Mail-Server [illegible] इन्टरनेट सर्विस Internet Service [illegible] [illegible] [illegible] A/C है, को दिया है।

[illegible] करने के बाद @ [illegible] जाता है जिसे [illegible] [illegible] at the rate sign [illegible] [illegible] है। इसके [illegible] [illegible] [illegible]-सर्वर का "[illegible]" Domain

...जाता है। इस "पत्रभाग" के द्वारा इसका आगे या दोनों को
...एक साथ करते है। इन कार्यों Projects को लिए Role
...है।

उदाहरण -

From - इस भाग में जो पत्र भेज रहा है, उसका
नाम ईमेल लिखा जा जाता है।

जैसे - Shweta 123@ Indiacom

To - इस भाग में पत्र की कॉपी जहाँ भेजनी है, उसका पता लिखा
जाता है। इसका मैसेज पत्र की एक कॉपी भेजने वालों के द्वारा भेजा
जा जाती है।

Subject - इस भाग में पत्र का विषय लिखा जाता

जैसे - Hello How are you? जैसे मैसेज वाली
...में हम कितना भी मैटर टाइप कर सकते है।

[illegible]

Q- निम्न आंतरिक Dos command को समझाइए

Internal

Dos

Command

CD (Command)

CHCP (Dos command)

CLEAR (Dos command)

CLS (Command)

CLS (DOS command)

COMMAND (Command)

Copy (Command)

DATE (Command)

TIME (Command)

DIR (Command)

MD (Command)

DEL (Command)

PATH (Command)

TYPE (Command)

PROMPT (Command)

CD - Command -

Change Directory - इस का उपयोग डायरेक्ट्री को बदलने के लिए किया जाता है

Syntax - C:\> CD < DIR

Name >

Ex - C:\> CD ABC

DIR - Command - यह कमांड किसी डायरेक्ट्री के file फाइल और सब डायरेक्ट्री कि सूची प्रदर्शित करता है

Syntax - C:\> Dir

यदि किसी विशेष डायरेक्ट्री की फाइल कि सूची देखना चाहते है। तो dir के साथ डायरेक्ट्री का नाम देते है।

Syntax -

C:\> Dir <Directory name>

Ex - C:\> Dir abc

MD Command (Make Directory) - इस कमांड का प्रयोग नयी डायरेक्ट्री बनाने के लिए किया जाता है

Syntax -

C:\> MD <Directory name>

Ex - C:\> MD ABC

9. CD - Command - इस कमांड का प्रयोग डायरेक्ट्री से बाहर जाने लिए किया जाता है।

Syntax - C:\>< Dir name >< Command >

Ex - C:\> ABC>CD

C:\>

॥ ॐ ॥

RD - Command - Remove Directory - इस कमांड का प्रयोग Disk में बने से भी एवं डायरेक्टरी को Remove करने के लिए किया जाता है।

Syntax - C:\>RD<DIR Name>

Ex - C:\>RD ABC

CLS (Clear Screen Command) इस Command से पूरा Screen को Clean कर सकते हैं।

Syntax - C:\>CLS

Ex - C:\>CLS

Copy - Command - इस Command के द्वारा हम किसी भी file की duplicate file बना सकते हैं।

Syntax - 1 C:\>Copy<file Name><New Name>

Syntax - 2 C:\> Copy <Path\file name><Target Drive>

Ex - C:\> Copy ABC XYZ

Ex C:\> Copy DELHI

8.

DEL Command

Delete command इस कमांड का उपयोग file को disk से delete करने के लिए किया जाता है।

Syntax - C:\> DEL <DIR Name>

Ex C:\> DEL ABC.txt

REN - Command - (RENAME COMMAND)

इस कमांड का प्रयोग file को Rename करने के लिए किया जाता है।

Syntax - C:\> REN <old file name><New file Name>

Ex - ABC.txt XYZ.txt

TYPE command इस command का use हम file के Text को Screen पर देखने के लिए करते है।

Syntax - C:\> TYPE <DIR Name

Ex - C:\> RD ABC.txt

DATE Command इस कमांड के द्वारा हम current date (mm-dd-yy) format में देख

Syntax - C:\> date
Ex - C:\> date

TIME Command - इस Command के द्वारा हम Current time देख सकते है।

Syntax - C:\> time
Ex - C:\> time

4. VER -

VERSION - इस command के द्वारा हम System में Present disk ऑपरेटिंग सिस्टम का वर्जन देख सकते है।

Syntax - C:\> VER
Ex - C:\> VER

5. Copy -

Command का use file को create करने के लिए किया जाता है।

Existing file : file Ctrl+Z के द्वारा Save कि जाती है।

Syntax - Con < file name > C:\> copy
Ex. Con ABC. txt
Hello this is first file
^Z Ctrl+Z)/F6

1 file copied

PATH COMMAND - इस Command में DOS को यह बताया जाता है कि किसी प्रोग्राम का पता लगाने के लिए उसे कौन सी directory search करना चाहिए।

Syntax - C:\> PATH

Ex - C:\> PATH

Changing the drive

किसी भी drive का change करने के लिए उस drive का name Colon के साथ लिखा जाता है।

Syntax - C:\> Drive name :

Ex - C:\> A:

Exit Command - इस Command का use DOS Prompt से बाहर आने के लिए किया जाता है।

Syntax - C:\> Exit

Ex - C:\> Exit

PROMPT Command - इस Command के द्वारा हम Prompt change कर सकते हैं।

Syntax - C:\> Prompt name C:\>

Ex - Prompt Pawan

प्रश्न

7. एम.एफ हुसैन से संबंधित व संक्षिप्त [illegible] के द्वारा दूसरी कक्षा के पांच विद्यार्थियों की [illegible] तैयार कीजिए

1. एम. एस. पॉवर पाइन्ट में एक वैदिक प्रेजेन्टेशन तैयार कीजिए

- भूमिका
- प्रकार
- स्लाईड्स
- डिजाइन
- एनीमेशन.

भूमिका

इंटरनेट की दुनिया में डिजाइन के साथ-साथ Print media Publication में भी तेजी से प्रगति हो रही है जैसे में online मीडिया या किसी भी प्रेजेन्टेशन company Branding में इसके प्रयोग होता है। Virtual Presentation और Creativity का दौर चल रहा एक बेहतर graphic Designer ही कर सकता है।

Power Point में एक साधारण Presentation बनाने के लिए Step-by-Step चीजों को लेकर Step-by-Step इनमें रखें, तो एक प्रस्तुति को भी प्रस्तुत करने के लिए तैयार है।

1) Content पहले इसका है.

Power Point एक इस्तेमाल आसानी प्रेजेंटेशन को दर्शाया जाता है। हम ग्राफिक्स को नई रूपों जैसे फोटो, वर्ड, इमेजेज, व्यावसायिक प्रस्तुत इत्यादि में उपयोग कर सकते हैं। वीडियो, ऑडियो, चित्र प्रस्तुत किसी भी ढंग में चित्र का प्रयोग एक व्यावसायिक कलाकार को उसके विचारों के संदर्भ में तौर तथा संदेश

...प्रदान करता है। इसमें विकासशील व्यापार को प्रदर्शित करने के लिए चित्रों का चुनाव एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें विकासशील व्यापार को प्रदर्शित करने के लिए चित्रों का चुनाव एक अत्यंत महत्वपूर्ण आकर्षित विषय है। विज्ञापन से सम्बंधित चित्र ऐसे होने चाहिए कि वे उपभोक्ता को प्रभावित करें तथा साथ ही उस चित्र द्वारा भी आकर्षित कर देते हैं, इसका मतलब उत्पादकता भी करें। अधिकतर लोगों को जानकारी प्रदर्शित करने के अन्य रूपों की तुलना में ज्यादा जल्दी तथा ज्यादा मात्रा में जानकारी प्रदान करता है।

ग्राफिक्स के बहुत सारे प्रकारों को मल्टीमीडिया में प्रयोग किया जाता है। ये नि.लि. हैं।

1. चित्र, फोटोग्राफ तथा 3D इमेज
2. डायग्राम्स
3. ग्राफ
4. चार्ट
5. फ्लोचार्ट
6. संगठन चार्ट

ध्वनि

"ध्वनि हवा में दबाव का एक [illegible] जाने वाला पैटर्न है और यह एक माइक्रोफोन ध्वनि तरंग को एक विद्युत तरंग में बदल देता है। दूसरे शब्दों में "ठीक बिजली और प्रकाश की ही तरह ध्वनि भी ऊर्जा का एक रूप है।"

हम सूचनाओं को शब्दों में प्रस्तुत करने के लिए ध्वनियों का प्रयोग कर सकते हैं। आजकल अनेक व्यक्ति टेपरिकॉर्डर [illegible] पहले की सामान्य ध्वनियों को सुनना अधिक पसंद करते हैं। कम्प्यूटर में ध्वनियों का प्रयोग करने के लिए उसको [illegible] जाता है। इसकी पूरी क्षमता में मल्टीमीडिया का इस्तेमाल होगा।

जैसा नहीं चाहिए। वाद्य हमें पृष्ठभूमि ध्वनि प्रभाव Background Sound - Effect - के साथ मल्टीमीडिया अनुप्रयोग Application का उपयोग करके वितरकों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। इस तरह या सुनिश्चित कर सकते हैं कि महत्वपूर्ण सूचना पर ध्यान दिया जाता है।

मल्टीमीडिया Multi + Media = Multimedia में ऑडियो के प्रकार है:

1. Analog Audio - एनालॉग ऑडियो
2. Digital Audio - डिजिटल ऑडियो
3.

एनालॉग ऑडियो - Analog Audio - एनालॉग ऑडियो तरंगों का उपयोग करता है तथा रिकार्ड की गई ध्वनि का पुनरुत्पादन करने के लिए इसे इलेक्ट्रिकल सिग्नल द्वारा प्रेषित किया जाता है।

डिजिटल ऑडियो - Digital Audio - डिजिटल ऑडियो file कम्प्यूटर पर स्टोरेज और नेटवर्क से संचरण के लिए संकुचित की जाती है। ऑडियो फाइलें छोटे-छोटे स्वतंत्र टुकड़ों में भेजी जा सकती हैं। एक मल्टीमीडिया आवेदन [illegible] के लिए [illegible] को विभिन्न-स्थान में ध्वनि के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। और ऑडियो या वीडियो कंप्यूटिंग में अच्छा होने के लिए, ध्वनि को स्टीरियो ध्वनि के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

[illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] है। [illegible] है। [illegible]

विज्ञापन

[illegible] विज्ञापन [illegible] है। [illegible] विज्ञापन [illegible] है। [illegible]

[illegible] विज्ञापन / विज्ञापन [illegible] है।

जाता सकता है। इसके साथ वेब डिजाइन तथा रचनात्मक योग्यता होती है।

व्यक्तिगत डिजाइनर बनने के लिए वेब डिजाइन संभवतः सबसे महत्वपूर्ण योग्यता है। यह इसके लिए बहुत सारे प्रोत्साहन प्रदान करता है। वेब डिजाइन व्यक्तिगत कंप्यूटर आवश्यकताओं में अपनी सेवाएं आप अपने घर बैठकर इंटरनेट से अपनी सेवाएं प्रदान कर सकते हैं तथा साथ यह योग्यता इसको संबंधित विशेषज्ञता के साथ व्यापार व्यक्तिगत कंपनियों एवं व्यापार हेतु महत्वपूर्ण भूमिका वाले डिजाइनर के रोल करते हैं।

एनीमेशन -

कम्प्यूटर एनीमेशन की शुरुआत 1960 के दशक में अमेरिका में हेवलेट पैकार्ड कंपनी डिजाइनों के द्वारा हुई। यह तकनीक इतनी उन्नत है कि कलाकार कम्प्यूटर स्क्रीन पर ही सीधे चित्र खींचता और उसे मैनिपुलेट करता है। पृष्ठभूमि बनाने के लिए और रंगों का चुनाव करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक रंगों और कंप्यूटर प्रोग्रामों का प्रयोग करके तैयार फ्रेमों को टेक्नोलॉजी के माध्यम से डिजिटलाइज किया जाता है तथा इन्हें कम्प्यूटर डिस्क में संग्रहित कर लिया जाता है। मल्टीमीडिया कम्प्यूटर सिस्टम विभिन्न प्रकार के फाइलों की सामग्री को एकत्र या एकीकृत करते हैं। कहानी, चित्र, पेंटिंग, कार्टूनों और निर्जीव वस्तुओं को सजीव होने का भ्रम उत्पन्न करने के लिए विभिन्न एनीमेशन में मानवीय और यांत्रिक प्रयासों के विभिन्न तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

एनीमेशन - "मल्टीमीडिया एनीमेशन एनीमेटेड या चलता या जीवन देने की प्रक्रिया है।" हम कह सकते हैं कि एनीमेशन अलग-अलग ऑब्जेक्ट्स (चित्र, टेक्स्ट, ग्राफिक्स) पर लागू इफेक्ट प्रभाव है।

विभिन्न नेन टोपोलॉजी का वर्णन कीजिए?
टोपोलॉजी नेटवर्क की आकृति या ले-आउट को कहा जाता है नेटवर्क के विभिन्न नोड किस प्रकार एक दूसरे से जुड़े होते हैं तथा कैसे एक दूसरे के साथ कम्युनिकेशन स्थापित करते हैं, यह नेटवर्क की टोपोलॉजी ही निर्धारित करता है टोपोलॉजी भौतिक या लॉजिकल होता है। computers को आपस में जोड़ने एवं उनमें डाटा flow की विधि टोपोलॉजी कहलाती है। टोपोलॉजी किसी नेटवर्क में कम्प्यूटर के ज्यामितीय व्यवस्था geometric arrangement को कहते हैं।

टोपोलॉजी के प्रकार

नेटवर्क टोपोलॉजी सामान्यतः निम्नलिखित प्रकार की होती है.

1. Ring Topology - रिंग टोपोलॉजी
2. Bus Topology - बस टोपोलॉजी
3. Star Topology - स्टार टोपोलॉजी
4. Mesh Topology - मेश टोपोलॉजी
5. Tree Topology - ट्री टोपोलॉजी

1. रिंग Ring Topology टोपोलॉजी -

इस कम्प्यूटर में कोई होस्ट, मुख्य या कंट्रोलिंग कम्प्यूटर नहीं होता। इसमें सभी कम्प्यूटर एक गोलाकार आकृति में लगे होते हैं प्रत्येक कम्प्यूटर अपने पड़ोसी कम्प्यूटर से जुड़े होते हैं किन्तु इसमें कोई भी कम्प्यूटर स्वामी

भी होता है इसे सर्कुलर Circular भी कहा जाता है।

Bus-Topology बस टोपोलॉजी:-

बस टोपोलॉजी में एक ही तार का प्रयोग होता है और सभी कम्प्यूटरों को एक तार से एक ही क्रम में जोड़ा जाता है। तार के प्रारंभ तथा अंत में विशेष प्रकार का स्थान रखा होता है जिसे टर्मिनेटर कहते है। इसका कार्य सिग्नलों को नियंत्रण करना होता है।

लाभ –

Advantage– बस टोपोलॉजी को स्थापित करना आसान होता है।

इसमें Star व Tree टोपोलॉजी की तुलना में कम Cable प्रयोग होता है।

हानि-

1. किसी एक कम्प्यूटर की खराबी से सारा डाटा स्थानान्तरण रुक जाता है।
2. बाद में किसी कम्प्यूटर को जोड़ना अपेक्षाकृत कठिन है

Star-Topology स्टार टोपोलॉजी –

इस नेटवर्क में एक Host computer होता है जिसे सीधे विभिन्न लोकल कम्प्यूटरों से जोड़ दिया जाता है। लोकल कम्प्यूटर आपस में एक दूसरे से नहीं जुड़े होते है। उनको आपस में होस्ट कम्प्यूटर द्वारा जोड़ा जाता है। होस्ट कम्प्यूटर द्वारा ही पूरे नेटवर्क को Controlled नियंत्रित किया जाता है।

॥ ६ ॥

लाभ - Advantages :- १) इस नेटवर्क टोपोलॉजी में एक कम्प्यूटर को होस्ट कम्प्यूटर को जोड़ने में लाइन बिछाने की लागत कम आती है।

२) इसमें लोकल कम्प्यूटर की संख्या बढ़ाये जाने पर एक कम्प्यूटर की आवश्यकता होती है।

३) इसमें Star बस टोपोलॉजी की तुलना में कम केबिल लगती है।

हानि - Disadvantages.

१) किसी एक Computer की खराबी से सारा डाटा संचार रुक जाता है।

२) बाद में किसी Computer को जोड़ना अपेक्षाकृत कठिन है।

Star Topology

इस नेटवर्क में एक होस्ट Computer होता है जिसे सीधे विभिन्न लोकल Computers से जोड़ दिया जाता है। लोकल कम्प्यूटर आपस में एक दूसरे से नहीं जुड़े होते हैं। सभी आपस में होस्ट कम्प्यूटर द्वारा जोड़ा जाता है। होस्ट कम्प्यूटर द्वारा ही पूरे नेटवर्क को कंट्रोल किया जाता है।

लाभ - Advantages -

१) इस नेटवर्क टोपोलॉजी में एक Computer से Host Computer को जोड़ने में line बिछाने की लागत कम आती है।

२) इसमें लोकल Computer की संख्या बढ़ाये जाने पर एक

Computer से other computer पर सूचनाओं के आदान-प्रदान की गति प्रभावित नहीं होती है इसमें कार्य करने की गति तेज रहती है। क्योंकि दो कम्प्यूटर के बीच केवल होस्ट Host कम्प्यूटर होता है।

2. यदि कोई Local computer खराब होता है तो शेष नेटवर्क पर प्रभावित नहीं होता है।

हानि- Disadvantages-

1. यदि पूरा तंत्र होस्ट कम्प्यूटर पर निर्भर होता है यदि होस्ट कम्प्यूटर खराब हो जाये तो पूरा का पूरा नेटवर्क बंद हो जाता है।

मेश MESH
टोपोलॉजी - Topology

मेश टोपोलॉजी को मेश नेटवर्क या मेश भी कहा जाता है। मेश एक नेटवर्क टोपोलॉजी है जिसमें सभी नेटवर्क नोड को मध्य वर्ती इंटरकनेक्शन [illegible] से जुड़े होते हैं। अर्थात मेश टोपोलॉजी में प्रत्येक नोड नेटवर्क के प्रत्येक नोड से जुड़े होते हैं।

मेश टोपोलॉजी में सभी कम्प्यूटर कहीं न कहीं एक दूसरे से जुड़े रहते हैं और एक दूसरे से जुड़े होने के कारण से सूचनाओं का आदान-प्रदान आसानी से कर सकते हैं इसमें कोई होस्ट कम्प्यूटर नहीं होता है।

Tree - Topology

ट्री टोपोलॉजी में स्टार तथा बस दोनों टोपोलॉजी के लक्षण विद्यमान होते है। इसमें Star टोपोलॉजी की तरह एक होस्ट कम्प्यूटर होता है और बस टोपोलॉजी की तरह सभी कम्प्यूटर एक ही केबल से जुड़े रहते है। यह नेटवर्क प्रत्येक

प्रदान किया देता है।

लाभ - Advantages

1. प्रत्येक खण्ड Segment के लिए पृथक तार बिछाया जाता है।
2. यह हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर विक्रेता के द्वारा सपोर्ट किया जाता है।

हानि - Disadvantages

1. प्रत्येक खण्ड Segment की कुल लम्बाई प्रयोग में लाये गए तार के द्वारा सीमित होती है। यदि बैकबोन लाइन टूट जाती है तो पूरा खण्ड Segment रुक जाता है।
2. दूसरी टोपोलॉजी की अपेक्षा इसमें तार बिछाना तथा इसे व्यवस्थित करना कठिन होता है।

सरल शब्दों में समझना -

टोपोलॉजी नेटवर्क की आकृति या ले-आउट को कहा जाता है। इसमें computers को आपस में जोड़ने एवं उनमें डाटा Flow की विधि टोपोलॉजी कहलाती है।

1. टोपोलॉजी पाँच प्रकार की होती है।

Ring
Bus
Star
Tree
Mesh
Topology.

Q. निम्नलिखित को समझाइये.

1. बूटिंग प्रोसेस
2. असेम्बलर
3. कम्पाइलर
4. इन्टरप्रिटर
5. मॉडेम

1. बूटिंग प्रोसेस –

Computer में विंडोज इंस्टाल करते समय बूटिंग का इस्तेमाल [अपने कम्प्यूटर] शब्द सुना होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं कि क्या होती है ये बूटिंग प्रोसेस यदि नहीं जानते हैं तो आइए जानते हैं कि कम्प्यूटर में बूटिंग क्या होती है।

जब आप कम्प्यूटर का पावर बटन (Power Button) या स्टार्ट बटन Start Button प्रेस करते हैं, तो स्टार्ट होने से पहले कम्प्यूटर में कई सारी प्रक्रियायें होती हैं। बूटिंग भी एक सारी प्रक्रिया है।

जब आप Computer Start करते हैं तो सबसे पहले सीपीयू CPU BIOS (Basic Input Output System) कम्प्यूटर को चेक करते हैं जिसमें Computer यह पता करता है कि मशीनों के सभी हिस्से पूरे हैं और ठीक प्रकार से काम कर रहे हैं या नहीं जैसे रैम, कि-बोर्ड, हार्डडिस्क इत्यादि की जांच होती है। यह प्रक्रिया कहलाती है।

॥श्री॥

जब Computer Post की प्रक्रिया Complete कर लेता है, BIOS डिवाइस को सर्च करता है, वह हर एक डिवाइस Booting फाइल को सर्च करता है।

सबसे पहले First Boot Device, Second Boot Device उसके बाद Third Boot Device, अगर इनमें भी Booting file न मिले तो Boot other Device. BIOS को डिवाइसों में पहले Booting file मिल जाती है कि वो दे कम्प्यूटर को शुरू करा देता है और Computer में

Type of Booting Process

कम्प्यूटर में Booting Process दो प्रकार के होते हैं।

1) Cold Booting

2) Warm Booting

Cold Booting - जब हम User के Computer का Power Button या Start Button को प्रेस कर के Computer को Start करते हैं तो इस Process को Cold Booting कहा जाता है।

2) Warm Booting - Computer के ऑन होने की स्थिति Key-Board के द्वारा Alt + Ctrl + Del कमाण्ड या रिस्टार्ट का प्रयोग कम्प्यूटर को दोबारा शुरू कराने की प्रक्रिया वार्म बूटिंग कहलाती है।

उपसंहार

Computer के अंदर ... Computer को असेम्बल करने में Computer के आंतरिक और बाहरी हिस्सों को जोड़कर स्थापित करते हैं। आंतरिक हिस्सों में मदरबोर्ड, रैम, हार्ड डिस्क, प्रोसेसर और सभी कार्ड शामिल हैं जो कि सिस्टम केस के अंदर स्थापित होते हैं। बाहरी उपकरण होते हैं, जो कि सिस्टम केस के बाहर स्थित होते हैं जैसे कि माउस, कीबोर्ड और मॉनिटर और प्रिंटर।

Computer को Assemble करने से पहले आपको पहले कुछ चीज़ें जिन्हें हम Assemble करना चाहते हैं उन चीज़ों का चयन करना चाहिए। क्योंकि कुछ लोग जब Computer खरीदते हैं तो कुछ लोग कम्प्यूटर खरीदते हैं तो कुछ लोग कम्प्यूटर को असेम्बल करवाते हैं। इसका कारण है कि कम्पनियों के द्वारा बनाये गये हार्डवेयर कम्पोनेन्ट्स पर निर्भर होना ... कम्प्यूटर को रिपेयर और अपग्रेड करने के लिए आपको इसका ज्ञान होने की आवश्यकता होती है। आप अपने कम्प्यूटर को असेम्बल करना अच्छी तरह से सीख लें तो आपको नौकरी के साथ-साथ व्यापार के तौर पर भी काम शुरू कर सकते हैं। और आप अपने घर में रहकर ही कम्प्यूटर Assemble की व्यवस्था से कर सकते हैं।

Computer Assembling Method

1. आपको एक कम्प्यूटर को असेम्बल करने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन करना होगा-

2. सबसे पहले कैबिनेट की व्यवस्था Computer Cabinet को खोल कर उसका कवर हटा दें।
3. कैबिनेट में SMPS स्थापित करें।
4. मदरबोर्ड पर प्रोसेसर इंस्टॉल करें।
5. प्रोसेसर पर हीटसिंक और कूलिंग फैन स्थापित करें।
6. कैबिनेट के अंदर मदरबोर्ड रखें।
7. मदरबोर्ड पर रैम मॉड्यूल स्थापित करें।

मदरबोर्ड में हार्ड डिस्क स्थापित करें।
मदरबोर्ड के में सीडी/डीवीडी रोम ड्राइव स्थापित करें।
एक्सपेंशन कार्ड स्थापित करें जैसे कि:-

1. नेटवर्क इंटरफेस कार्ड
2. वीडियो कार्ड
3. साउंड कार्ड
4. मॉडेम कार्ड

3. कम्पाइलर

आज हमने कम्प्यूटर की मशीनी भाषा के बारे में पता होगा तो हमको कम्पाइलर के बारे में भी पता होगा, तो आइये जानते हैं Compiler क्या होता है और कंप्यूटर में कम्पाइलर Compiler का मतलब होता है।

What is Compiler

Compiler प्रोग्रामिंग के लिए दो तरह की Language आवश्यक होती है। निम्नस्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा LOW LEVEL PROGRAMMING LANGUAGE एक विशेष मशीन के लिए लिखी जाती है. उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा High Level Programming Language से आमतौर मशीन से स्वतंत्र होती है और किसी भी प्रकार के Computer पर कार्य कर सकती है लेकिन जैसा कि हम जानते हैं Computer केवल मशीनी भाषा को समझता है। मशीनी भाषा में प्रोग्रामिंग करना संभव नहीं है। इसलिए प्रोग्रामिंग करने के लिए पहले उच्चस्तरीय भाषा का निर्माण किया गया जो कि उच्चस्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा है इसे मशीनी भाषा में बदलने के लिए अनुवाद करने के लिए एक प्रोग्राम बनाया गया जिसे ट्रांसलेटर

॥श्री॥

कहा जाता है

इसी प्रकार उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा जैसे सी, सी++, जावा आदि को भी मशीनी भाषा में करने की आवश्यकता होती है इसलिए यहाँ compiler और समय संग कम्प्यूटर को काम होता है जो किसी उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा High Level Programming Language में लिखे प्रोग्राम को किसी मशीनी भाषा में बदल देता है।

उच्च स्तरीय compiler भाषाएँ जैसे सी++, जावा में लिखे प्रोग्राम को सोर्स कोड कहा जाता है. Compiler इस सोर्स कोड को object कोड यानी code होते हैं जिसे कम्प्यूटर समझ सकता है या तो कम्पाइलर उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा को निम्न स्तरीय प्रोग्रामिंग low level Programming language में बदलने का काम करता है।

4) इन्टरप्रेटर

What is interpreter ? प्रोग्रामिंग भाषा को मशीनी भाषा में अनुवाद करने के लिए इंटरप्रेटर की आवश्यकता होती है इंटरप्रेटर भी कम्पाइलर की तरह ही ट्रांसलेटर का काम करता है तो आइये जानते हैं इंटरप्रेटर क्या है और ये कैसे काम करता है.

इंटरप्रेटर भी की तरह कम्प्यूटर स्तरीय भाषा को मशीनी भाषा में ट्रांसलेट करने का काम करता है उच्च स्तरीय कम्प्यूटर भाषाएँ जैसे सी++, जावा में लिखे प्रोग्राम को सोर्स कोड कहा जाता है इंटरप्रेटर सोर्स कोड की पहली लाइन का अनुवाद करता है और यदि पहली लाइन में कोई गलती होता है तो उसे दिखाता है गलती प्रदर्शित करता है और जब तक प्रोग्रामर इसी तरह से संशोधित नहीं करता है तो गलती ठीक नहीं हो सकती है. जब तक आगे नहीं बढ़ता

[illegible]

... एक पहली लाइन पूरी तरह संकलित हो जाती है तब दूसरी लाइन शुरू करता है तो इस तरह के कंप्यूटर interpreter लाइन बाई ... किसी प्रोग्राम को मशीनी भाषा में अनुवाद करता है.

यह एक प्रोग्राम ... इस बार में अनुवाद करता है. इस तरह के अनुवाद करने में कंप्यूटर ... में अधिक समय लेता है यह अपने सोर्स कोड को पूरी तरह मशीनी कोड में नहीं बदलता है क्योंकि हर बार अनुवाद करते समय सोर्स कोड की जरूरत होती है.

5. मॉडम

MODEM - मॉड्युलेटर-डिमॉड्युलेटर Modulator-demodulator का संक्षिप्त रूप है। यह एक ऐसी युक्ति डिवाइस है जो किसी डिजिटल सिग्नल सूचना को मॉड्युलेट करके इलेक्ट्रॉनिक analog प्रारूप में बदलती है और जो इलेक्ट्रॉनिक [illegible] से प्राप्त सिग्नल को डी-मॉड्युलेट करके डिजिटल रूप में बदल सकती है। यदि किसी कंप्यूटर के माध्यम और डिजिटल [illegible] दोनों computer के बीच संचार स्थापित करने के लिए आवश्यक उपकरण है।

1962 में पहला commercial modem AT&T द्वारा Bell 103 के रूप में निर्मित और बेचा गया था. कुछ Modems होते हैं dial-up कनेक्शन की तरह एक Phone number dial करना होता है।

SP के साथ connect होने के लिए ये Modems [illegible] होते हैं।

Standard Analog Phone lines में और इनमें भी वही समान frequencies

इस्तेमाल होता है Telephone calls के लिए, जो की DATA TRANSFER RATE को LIMIT कर देती है।

MAXIMUM 56 KBPS तक DIAL-UP MODEMS को LOCAL TELEPHONE LINE की FULL BANDWIDTH की जरूरत होती है, इसका मतलब की VOICE CALLS आमतौर पर इंटरनेट कनेक्शन को interrupt कर सकती है।

यही कारण है typically DSL और cable Modems होते है जिन्हें भी "Broadband" devices कहा जाता है DSL Modems इस्तेमाल करते है Standard telephone lines के ऊपर लेकिन ये एक wider frequency range इस्तेमाल करते है जो Allow करते है higher data transfer रेट के लिए साथ ही काफी ज्यादा करते dial-up modems और साथ ही ये वॉइस कॉल interfere भी नहीं करती है।

Cable modems data को Sent और Receive करते है।

Standard cable television lines जो की typically Coaxial cables ही होते है इस्तेमाल किया जाता सिग्नल ट्रांसमिट करते है।

DOCSIS - DATA OVER-CABLE SERVICE INTERFACE SPECIFICATION जो की एक है, एक EFFICENT तरीका जिससे की TV. CABLE INTERNET और DIGITAL PHONE SIGNALS को एक साथ TRANSMIT किया जा सके। सभी एक CABLE LINE से।

NOTE:- चूँकि एक Modem Convert करता है Analog Signals को digital में और Vice-versa इसलिए इसे ADC या DAC की जरूरत होती है - यह सामान्य मॉड्यूल कोड कंटेनर है जो प्रोसीजर्स और उनकी परिभाषा को रखता है

मुख्य रूप से 3 तीन प्रकार का होता है।

1) Form Modules
2) Standard Modules
3) Class Modules

Form MODULES - फॉर्म मॉड्यूल प्रोसीजर्स होते हैं जो निम्नलिखित कार्यों को HANDLING करता

1) EVENTS
2) सामान्य प्रोसीजर
3) फॉर्म लेवल के वेरिएबल को परिभाषित करना
4) कलेक्टरस फॉर्म मॉड्यूल में लिखा गया कोड किसी एप्लिकेशन के साधारण में रख सकता है।

Standard Module.

Affiliation Module के बारे में जाने हुए यह प्रोसीजर्स ही होता है जो इसके access किया जाता है।

॥ श्री ॥

Steps for opening standard module

Project menu

Add module - Ais

module

dialog

code window - Project explorer - Property window - showing new module

2)

Class module - Module को

[illegible] द्वारा बनाये customer action [illegible]

किए जाता है।

Step - (1) Project Add class

modules - open

(2) Add class module daily.

Name of the School:-
Name of the Pupil teacher:- Tazeen Qureshi
Class :- 9th Date :-
Subject:- Economics Period:- V
Topic :- Rural Economy and its Structure Duration:- 40mins

General Aims:-

(1) To acquaint the students with the contemporary economy of the world
(2) To enable them to know about the nation's physical and human resources and their potential for economic development
(3) To deepen their understanding and knowledge about Economics and its impact
(4) To become familiar with salient developments in the world economy both in present day and in historical context
(5) To gain understanding of some Economic principles.

Specific Aim:-

Cognitive domain:
∴ Students will be able to know what is economy.
∴ Students will be able to know the parts of Indian economy
∴ Students will be able to understand rural economy and its growth
∴ Students will be able to understand rural economy before the arrival of Britishers.

Affective Domain:-
∴ Students will develop interest in various activities.
∴ Students will develop a broad outlook among students to become sensitive to the needs of the underprivileged sections of the society.

Psychomotor Domain:-
∴ The students will be able to make a structure of the rural economy.

Teaching Method:- Explanation Method

Material aids:- Normal classroom equipments, chalk, duster, roller-up board

Previous Knowledge:- Students are aware of some of the systems of ancient rural economy.

Introduction:-

Trainee Teacher's Activity	Students' Activity
Q: what do you mean by	

economy ?	All the activities that are carried in order to earn money.
Q1 Give some example...!	Teaching, business, grocery shop, engineering services
Q2 Does only urban areas participate in economy?	Villages also contribute to economy.
Q3. How do villages contribute to a country's economy? what activities they do?	Agriculture, Horticulture, fishing etc.
Q4 What does village economy called?	Rural economy.

Presentation:

The topic "Rural Economy and its structure" will be taught.

Teaching Point	Trainee Teacher's Activity	Students' activity	Black Board work
Meaning of Economy	All the activities performed in order to earn money, are called economic activities. And these contribute economy. We can define economy as	Students listening carefully.	
Definition	"An economy is a system by which people earn their livings and it includes all kind of economic activities."		

Comp. Ques.	So what is economy?	A system by which people earn their livings	
	Yes! Good!		
Division of Economy	On the basis of characteristics Indian economy can be divided into two parts: Geographical and [illegible] based and it is further divided into: Rural and Urban.	Children looking at the board.	Indian Economy → Geography based → Rural Economy, Urban Economy
Rural Economy	Rural area means village area and therefore we will look at village economy now. Since most of the population in India resides in villages, the importance of rural economy is great. We can divide rural economy into 3 parts: (a) Before the arrival of Britishers (b) During British rule (c) After independence.	Children looking at the board	Rural Economy → Before British rule, During British rule, After Independence
Comp. Ques.	What are the 3 parts?	Before Brit. During B.R. After Indep.	
Structure of R.E. during the arrival of Britishers	In ancient times villages were a major unit of economy. At that time villages were		

Self sufficient, prosperous and happy

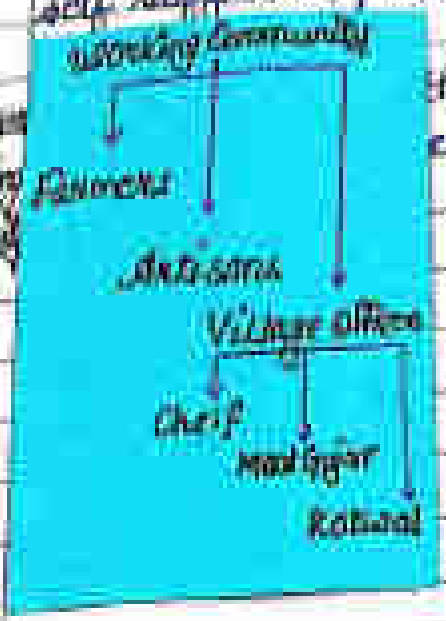

Structure of working community		the working class economy of village	Children looking at the chart.

Farmers :- Agricultural Activities
Artisans :- carpenters, blacksmith, potter, gold smith, cobbler, weavers etc.

Village officers:
(a) Chief - Head; responsible for collecting rent from the farmers and paying it to the ruler (King).
(b) Maal Gujar - Record keeper of land revenue.
(c) Kotwal - Informed ruler about the crimes and other imp information.

Black Board Work :-

1
Date:
Period: II
Duration: 40 min

Name of the school:
Name of trainee teacher: FARZYA QURESHI
Class :- 9th
Subject :- Economics
Topic :- Rural Economy & its Structure

- Indian Economy
  - Geography based
    - Rural
      - Before British Rule
      - During British Rule
      - After Independence
    - Urban
  - work based

Recapitulation :-

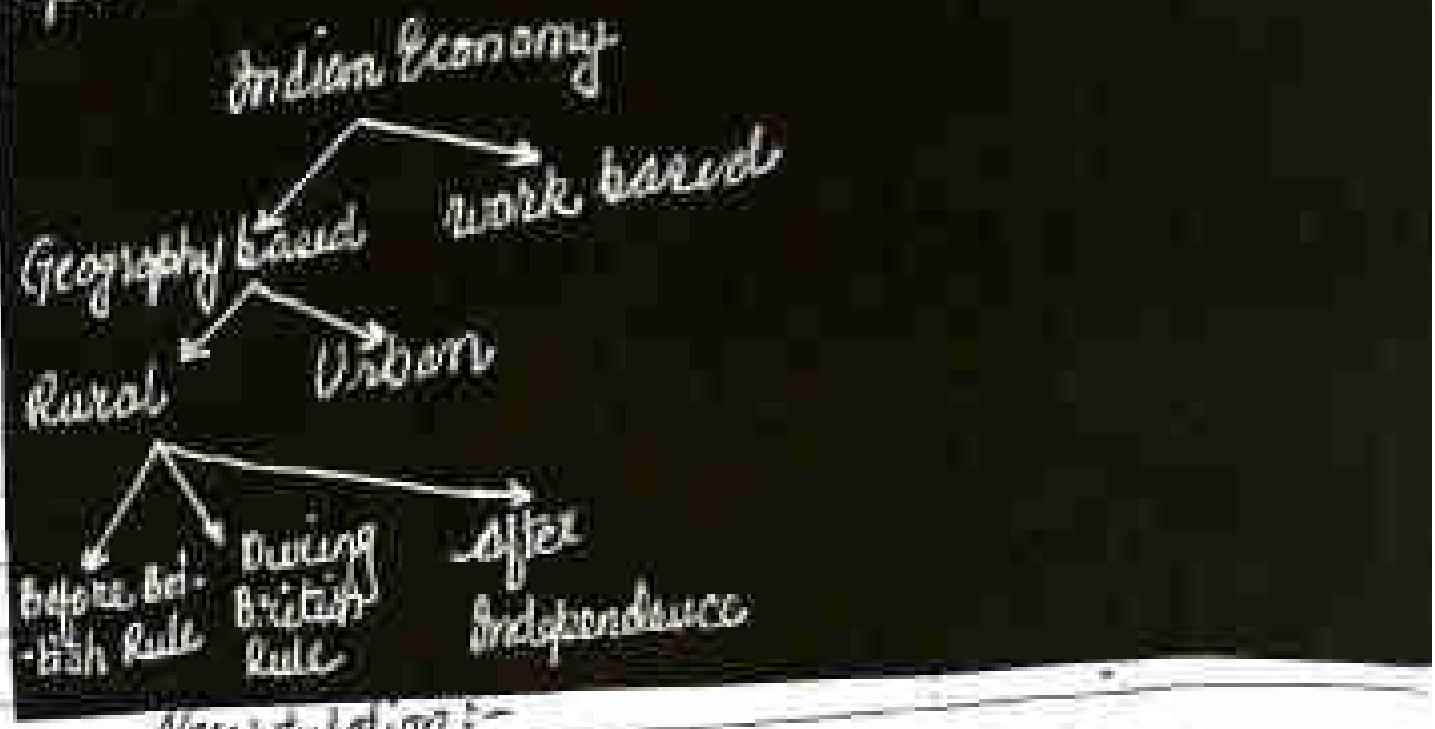

S.no	Trainee Teacher's activity	Students activity
1.	In how many parts Indian Economy can be divided?	Two; Geographical basis and on the basis of work
2.	On Geographical basis we can divide Indian economy into how many parts?	Rural and Urban
3.	Rural economy can be bifurcated into ____?	Before British rule During British rule After independence.

4.	What do you understand by rural economy?	Rural economy refers to the money generating activities of villages
5.	Explain the term economy?	Economy is a system by which people earn their living.

Classwork:-

S.no	Trainee Teacher's Activity	Students' Activity
1.	What was the structure of the working community before the arrival of the Britishers?	W.C → Farmers, Artisans, Village officers Village officers → chief, Maal Gujar, Kohaal
2	Match the following	
	(a) Farmers (i) informed about crime (b) Artisans (ii) Agriculture (c) Chief (iii) Record keeper (d) Maal Gujar (iv) collects rent (e) Kohaal (v) potter weaver etc.	Answers (a) (ii) (b) (v) (c) (iv) (d) (iii) (e) (i)

Homework:-

(i) Write in detail about the rural working community of India before the arrival of Britishers.

Subject Teacher's Signature

Student Teacher's Signature

Supervisor's Signature